बाइबल प्रवचन

लेखक
सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक:

मसीह की कलीसिया

पोस्ट बॉक्स नं० ३८१५

नई दिल्ली-११००४९

प्रथम संस्करण :

१९८१

मुद्रक :

प्रिन्ट इन्डिया

ए-३८/२, फेस I इन्डस्ट्रीयल एरिया,

माया पुरी, नई दिल्ली-११००६४.

SERMONS ON THE BIBLE

(Twelve Radio Sermons, in Hindi)

By
Sunny David

Published by :
Church of Christ
Post Box 3815
New Delhi–110049

Table of Sermons

		Page
1.	How do you read the Bible ?	10
2.	A Wonderful Book	16
3.	The Amazing Bible	22
4.	Who Wrote the Bible ?	28
5.	What is the purpose of the Bible ?	34
6.	Rules of Studying the Bible	41
7.	What should we do with the Old Testament of the Bible ?	49
8.	Should we keep the Ten Commandments ?	56
9.	Ten Commandments in light of the New Testament (1)	61
10.	Ten Commandments in light of the New Testament (2)	68
11.	Can we all understand the Bible alike ?	75
12.	Why do we preach the Bible ?	81

पुस्तक के सम्बन्ध में.....

यूं तो हमारे संसार में पुस्तकों की कोई कमी नहीं है, लगभग हर एक विषय और हर एक भाषा में पृथ्वी पर नाना प्रकार की पुस्तकें विद्यमान् हैं। परन्तु पृथ्वी पर केवल एक ही ऐसी पुस्तक है जो लगभग हर एक विषय से परिपूर्ण है तथा हर एक भाषा में उपलब्ध है, और वह पुस्तक है—बाइबल। जबकि प्रत्येक अन्य पुस्तक को मनुष्य ने अपनी बुद्धि से लिखा है, बाइबल को परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है। यही कारण है कि इस पुस्तक को अक्सर पवित्र शास्त्र तथा परमेश्वर का वचन भी कहकर सम्बोधित किया जाता है। सो क्योंकि बाइबल परमेश्वर का वचन है, इसलिए इस पुस्तक के सम्बन्ध में कभी भी पर्याप्त लिखा या कहा नहीं जा सकता। किन्तु प्रवचनों की इस पुस्तक में मैंने पाठकगण का ध्यान बाइबल से सम्बन्धित कुछ बड़ी ही आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण बातों पर दिलाने का प्रयत्न किया है।

"अक्सर लोगों के घरों में बाइबल के ऊपर धूल या मिट्टी जमी रहती है, जिस से प्रतीत होता है कि काफ़ी अधिक समय से उसे उठाकर पढ़ा नहीं गया", अब यह कोई कहावत ही नहीं रह गई है, परन्तु एक सच्चाई बन गई है। आपके घर में तख्ते पर रखी या अन्य पुस्तकों के बीच में पड़ी बाइबल कोई एक मामूली पुस्तक नहीं है, परन्तु इस पुस्तक में परमेश्वर का वचन, उसकी आज्ञाएं तथा आदेश हैं। यह एक अद्भुत, आश्चर्यपूर्ण, तथा सामर्थ्यपूर्ण पुस्तक है। इस पुस्तक को परमेश्वर ने मनुष्य को इस जीवन में दिया है, तथा न्याय के दिन

प्रत्येक मनुष्य इसी पुस्तक के द्वारा धर्मी और दोषी ठहराया जाएगा। इस पुस्तक में हमें परमेश्वर का मार्ग मिलता है। जिस मनुष्य ने बाइबल को नहीं पढ़ा है वह वास्तव में अन्धकार में है।

परमेश्वर के वचन की पुस्तक की उपरोक्त तथा अन्य विशेषताओं से पाठकगण को भली-भाँति परिचित कराने के उद्देश्य से "बाइबल प्रवचन" की रचना की गई है। मेरी आशा है कि इस उद्देश्य की पूर्ति की दिशा में प्रस्तुत पुस्तक सहायक सिद्ध होगी।

—लेखक

सत्य सुसमाचार
पोस्ट बॉक्स ३८१५
नई दिल्ली-११००४९.

परिचय

बाइबल के सम्बन्ध में आप क्या जानते हैं ? बाइबल का अर्थ है "एक पुस्तक" यह पुस्तकों की पुस्तक है, और संसार की सभी अन्य पुस्तकों से महान् पुस्तक है। क्योंकि बाइबल परमेश्वर के वचन पुस्तक है।

यदि आप इस महान् पुस्तक से परिचित नहीं हैं, तो आप को इस पुस्तक को जानने की आवश्यकता है। यदि आप इस पुस्तक को पढ़ेंगे, इसका अध्ययन करेंगे, तो आप इसमें लिखी बातों पर अवश्य ही विश्वास लाएंगे, और यदि आप इस पुस्तक में लिखी आज्ञाओं का पालन करेंगे तो आप उद्धार पाएंगे और आपको अनन्त जीवन की आशा मिलेगी।

भाई सनी डेविड ने, जो सत्य सुसमाचार के वक्ता तथा प्रस्तुत पुस्तक के लेखक हैं, "बाइबल प्रवचन" में अपने प्रवचनों के द्वारा परमेश्वर की इसी महान् पुस्तक के महत्त्व की ओर हमारा ध्यान दिलाया है। भाई सनी डेविड एक बड़े ही अच्छे सुसमाचार-प्रचारक हैं। मैं उनकी तथा उनकी इस नई रचना की सराहना करता हूं। मैं आपसे यह भी कहना चाहता हूं, कि इन पाठों को उन्होंने आपके लिए विशेष रूप से तैयार किया है। इनके द्वारा वे आपका ध्यान बाइबल की ओर दिलाना चाहते हैं, और प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि आप बाइबल में लिखी बातों को स्वीकार करके उन्हें मानें। परमेश्वर आपको आशीष दे, जबकि आप ऐसा ही करते हैं।

जे०सी० चोट
मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली।

रेडियो पर सुनिए !

सत्य सुसमाचार के
साप्ताहिक कार्यक्रम
सप्ताह में चार बार

प्रत्येक :

मंगलवार	—	रात को ९ : ०० बजे
बृहस्पतिवार	—	रात को ९ : ०० बजे
शुक्रवार	—	रात को ९ : ०० बजे
रविवार	—	दिन में १ : ३० बजे

ये कार्यक्रम रेडियो श्री लंका (सिलोन) से १९, २५ तथा ३१ मीटर बैन्ड पर सुने जा सकते हैं।

वक्ता :

सनी डेविड

प्रस्तुतकर्त्ता :

मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली।

प्रवचनों की सूची

	पृष्ठ
१. आप बाइबल को किस प्रकार पढ़ते हैं ?	१०
२. एक अद्भुत पुस्तक	१६
३. आश्चर्य-पूर्ण बाइबल	२२
४. बाइबल का लेखक कौन है ?	२८
५. बाइबल का उद्देश्य क्या है ?	३४
६. बाइबल पढ़ने के नियम	४१
७. बाइबल के पुराने नियम का हम क्या करें ?	४९
८. क्या हमें दस आज्ञाओं को मानना चाहिए ?	५६
९. दस आज्ञाएं, नए नियम के प्रकाश में (१)	६१
१०. दस आज्ञाएं, नए नियम के प्रकाश में (२)	६८
११. क्या हम सब बाइबल को एक समान समझ सकते हैं ?	७५
१२. हम बाइबल का प्रचार क्यों करते हैं ?	८१

आप बाइबल को किस प्रकार पढ़ते हैं ?

मित्रो :

संसार में केवल एक ही ऐसी पुस्तक है जो लगभग सभी देशों में और सभी भाषाओं में उपलब्ध है, और वह पुस्तक है बाइबल। संसार के अधिकांश लोग इस पुस्तक में विश्वास करते हैं कि यह पुस्तक परमेश्वर का वचन है। और एक बहुत बड़ी संख्या में लोग इसे पढ़ते भी हैं। परन्तु महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि कितने लोग बाइबल को पढ़ते हैं, आप में से भी बहुतेरे लोग बाइबल को अवश्य ही पढ़ते होंगे। पर विशेष बात यह है, कि हम बाइबल को किस प्रकार पढ़ते हैं ?

बाइबल एक बड़ी ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। इसलिए नहीं कि यह पुस्तक संसार में सभी देशों तथा सभी भाषाओं में उपलब्ध है, परन्तु इसलिए क्योंकि यह पुस्तक परमेश्वर का वचन है, अर्थात इस पुस्तक को परमेश्वर ने लिखवाकर मनुष्य को दिया है। यह पुस्तक परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई है। क्योंकि परमेश्वर मनुष्य से बातें करना चाहता है; वह उस पर अपनी इच्छा को व्यक्त करना चाहता है। परन्तु जबकि बाइबल एक बड़ी ही महत्वपूर्ण पुस्तक है, अक्सर लोग इस किताब को गम्भीरता के साथ महत्वपूर्ण समझकर ध्यान से नहीं पढ़ते। और इसका एक विशेष कारण यह है कि अधिकांश लोग बाइबल को एक धर्म की पुस्तक समझकर पढ़ते हैं। अर्थात् वे इस पुस्तक को परमेश्वर का वचन मानकर नहीं पढ़ते। शायद

आपने किसी समय किसी व्यक्ति को मोतियों की माला हाथ में लिए मोतियों को गिनते देखा होगा। आप जानते हैं वह मनुष्य क्या कर रहा है ? वह उन मोतियों को उंगलियों पर गिनते-गिनते अपनी प्रार्थना पढ़ रहा है। वह लोगों से बातें भी करता रहता है और इधर-उधर की बातों पर भी विचार करता रहता है, परन्तु उसी समय वह मोतियों को गिनते हुए अपनी प्रार्थना भी कर रहा है। अभी कुछ ही समय पूर्व जब मैं नेपाल में एक मन्दिर के भीतर गया तो वहाँ मैंने एक मनुष्य को बैठे देखा जिसके हाथ में एक चर्खी थी, और वह निरन्तर उस चर्खी को घुमाए जा रहा था। बीच-बीच में वह आने-जानेवालों से बातें भी करता रहता था, परन्तु साथ ही वह अपनी चर्खी घुमाए जा रहा था। आप जानते हैं, वह क्या कर रहा था ? उसने उस चर्खी के भीतर अपनी प्रार्थना लिखकर डाली हुई थी और उसे घुमा-घुमाकर वह अपनी प्रार्थना कह रहा था। परन्तु ठीक ऐसा ही कुछ लोगों का व्यवहार बाइबल के प्रति भी है। वे बाइबल भी पढ़ते जाते हैं, और बीच-बीच में इधर-उधर की बातें भी करते जाते हैं; और-और बातों पर भी विचार करते जाते हैं। किंतु इस प्रकार से जो लोग बाइबल को पढ़ते हैं उन्हें इस पुस्तक से कभी कुछ प्राप्त न होगा। वास्तव में वे लोग अपना समय बर्बाद कर रहे हैं। हमें बाइबल को अपने आप को संतोष दिलाने के लिए नहीं पढ़ना चाहिए, यानि कि हमने बाइबल पढ़ ली सो हमने कोई बड़ा अच्छा धर्म का काम कर लिया। परन्तु इस पुस्तक को हमें ध्यान-पूर्वक गम्भीरता के साथ मन लगाकर पढ़ना चाहिए, यह देखने के लिए कि परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमसे क्या कह रहा है।

अब मान लीजिए, कि आप किसी स्कूल या कॉलेज में पढ़ते हैं, और आपकी परीक्षा का समय निकट आ रहा है; सो आपको तैयारी करनी है। अब आप अपनी पुस्तक उठाते हैं और उसे ऐसे ही बीच

में से खोलकर कहीं से भी थोड़ा सा पढ़ने लगते हैं, और अभी वह समझ में भी नहीं आया कि दो-चार पन्ने किताब के पलटकर फिर कहीं और से पढ़ने लगते हैं। फिर वह भी समझ में नहीं आया तो कुछ और पृष्ठ पलटकर कहीं और से पढ़ने लगते हैं। अब मैं आपसे पूछता हूं कि क्या ऐसा मनुष्य, जो अपनी पुस्तक को नियमित ढंग से नहीं पढ़ता, अपनी परीक्षा में सफल हो सकता है ? परन्तु ठीक ऐसे ही कुछ लोग बाइबल को भी पढ़ते हैं। थोड़ा इधर से थोड़ा उधर से; बीच में से कहीं से भी पढ़ना आरम्भ कर दिया। इसमें कोई संदेह नहीं कि बहुतेरे लोग पढ़ने के बावजूद भी बाइबल को नहीं समझ पाते, क्योंकि वे नियमित ढंग से नहीं पढ़ते। परन्तु फिर वे कहते हैं, कि बाइबल बड़ी कठिन पुस्तक है; इसे समझा नहीं जा सकता। किन्तु आप किसी भी पुस्तक को नियमित रूप से पढ़े बिना नहीं समझ सकते। क्या परमेश्वर नहीं चाहता कि हम उसकी इच्छा को समझें और उस पर चलें ? यदि वह चाहता है, तो अवश्य ही उसने हमें एक ऐसी पुस्तक दी है जिसे हम समझ सकते हैं। परमेश्वर जानता है कि हम कितने समझदार हैं, और हम कितना समझ सकते हैं, सो उसने इसी दृष्टिकोण से अपने वचन की पुस्तक को लिखवाया भी है। परन्तु यदि हम उसकी पुस्तक को नियमित ढंग से नहीं पढ़ते और फलस्वरूप नहीं समझ पाते तो यह दोष हमारा अपना है।

परन्तु कुछ लोगों ने बाइबल को पढ़ने का काम दूसरों पर छोड़ दिया है। वे सोचते हैं कि बाइबल पढ़ना केवल "याजकों" और "पादरियों" का ही काम है। यही कारण है कि आज इतना अधिक अंध विश्वास है, और ऐसी-ऐसी बातों को बाइबल के नाम से माना जा रहा है जिनका बाइबल में कहीं नाम तक भी नहीं मिलता है। क्योंकि लोग स्वयं बाइबल को नहीं पढ़ते, परन्तु जानकारी के लिए पूर्ण रूप से केवल "याजकों" तथा "पादरियों" पर ही निर्भर रहते हैं,

इस कारण उन्हें उनके द्वारा जो कुछ भी मिलता है उसे वे बाइबल की शिक्षा जानकर ग्रहण कर लेते हैं। क्या आप सुन रहे हैं ? यह बिल्कुल सच है। परमेश्वर ने बाइबल को "याजकों" और "पादरियों" को नहीं दिया है, परन्तु उसने अपनी पुस्तक को प्रत्येक मनुष्य को दिया है। बाइबल में हम एक जगह परमेश्वर के वचन के दो प्रचारकों के बारे में पढ़ते हैं। उनमें से एक का नाम पौलुस था तथा दूसरे का सीलास। लिखा है, कि ये दोनों प्रचारक जब बिरीया नाम के एक स्थान पर आकर परमेश्वर का वचन सुनाने लगे। तो वहाँ लोगों ने सुनकर "बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में से ढूंढ़ते रहे कि ये बातें यों ही हैं, कि नहीं।" (प्रेरितों १७:११)। सुना आपने ? वे लोग पौलुस और सीलास जैसे प्रचारकों से वचन सुनने के बाद भी बाइबल की पुस्तकों में से ढूंढ़ते रहे कि जो उन्होंने प्रचार किया था, क्या वह बाइबल में भी लिखा है या नहीं ? और आगे हम पढ़ते हैं, कि जब उन्होंने उनकी बातों को बाइबल में लिखा पा लिया, तो उनमें से बहुतेरों ने वचन पर विश्वास किया। यह सच है, कि यदि आज भी लोग परमेश्वर के वचन की पुस्तक को स्वयं गम्भीरता पूर्वक ध्यान से पढ़ना आरम्भ कर दें, तो बहुत सा अंध-विश्वास और बाइबल के नाम पर माने जानेवाले मनुष्यों के अनेक उपदेश, जो आज प्रचलित हैं, लोगों से दूर हो जाएंगे।

सो बाइबल को स्वयं गम्भीरता के साथ पढ़ना बड़ी ही आवश्यक तथा महत्वपूर्ण बात है। हमें अपने आप को सचमुच में बड़ा ही भाग्यशाली समझना चाहिए, क्योंकि यद्यपि हम अपने परमेश्वर को अपनी शारीरिक आंखों से देख तो नहीं सकते, परन्तु तौभी हम उसके वचन को उसकी पुस्तक में पढ़ सकते हैं। परमेश्वर आज अपनी इच्छा को किसी भी अन्य ढंग से या किसी भी अन्य पुस्तक के द्वारा मनुष्य पर प्रगट नहीं कर रहा है। परमेश्वर की केवल एक

ही इच्छा है, और उसकी इच्छा को हम केवल बाइबल के भीतर पढ़ते हैं। परन्तु महत्वपूर्ण बात यह है, कि हम बाइबल को किस प्रकार पढ़ते हैं। इस पुस्तक को हमें केवल अपने आपको संतुष्ट करने के लिये नहीं पढ़ना चाहिए, परन्तु नियमित रूप से, ध्यानपूर्वक, यह जानने के लिये पढ़ना चाहिए कि परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हम से क्या कह रहा है। हमें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि इस पुस्तक में दो नियम अर्थात् दो वाचाएं हैं, अर्थात् एक पुराना है और दूसरा नया। पुराने नियम में हमें सृष्टि का इतिहास मिलता है और इस वाचा में हमें अनेक भविष्यद्वाणियाँ मिलती हैं जो परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के संसार में आने के सम्बन्ध में थीं। परन्तु प्रभु यीशु के जगत में आने और जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये क्रूस पर बलिदान हो जाने के बाद, परमेश्वर ने पुराने नियम को समाप्त करके उसके स्थान पर हमें अपना नया नियम दिया है। नया नियम हमें बताता है, कि यीशु परमेश्वर की इच्छा से जगत के पापों के कारण क्रूस के ऊपर मारा गया। और यदि कोई भी मनुष्य यीशु मसीह में विश्वास लाएगा, और अपना मन पाप से फिराएगा और अपने पापों की क्षमा के लिये मसीह में बपतिस्मा लेगा, तो परमेश्वर, मसीह के कारण, उस मनुष्य के सारे पाप क्षमा करेगा। बाइबल का नया नियम आज हमारे लिये परमेश्वर का नियम है, उसकी इच्छा हैं, जिसके अनुसार हमें चलना हैं। नए नियम में परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह तथा उसके प्रेरितों के द्वारा हमेंअपनी आज्ञाएं दी है। नया नियम हमें बताता है, कि मनुष्य उद्धार कैसे प्राप्त कर सकता है, परमेश्वर की उपासना कैसे कर सकता है, और किस प्रकार परमेश्वर की इच्छा पर चलकर स्वर्ग के राज्य के भीतर प्रवेश कर सकता है।

मित्रो, परमेश्वर अपनी पुस्तक के द्वारा आज आपसे बातें करना चाहता है, वह आपको अपनी इच्छा बताना चाहता है। मेरा

आपसे आग्रह है कि आप एक बाइबल की प्रति प्राप्त करके उसे पढ़ना आरम्भ करें। यह किसी धर्म की पुस्तक नहीं है। यह हमारे परमेश्वर की पुस्तक है। इस पुस्तक के द्वारा परमेश्वर हमसे बातें करना चाहता है।

प्रभु आपको आशीष दे।

एक अद्भुत पुस्तक

मित्रो :

संसार में किसी भी वस्तु पर इतने अधिक हमले कभी नहीं हुए जितने कि इस पुस्तक पर हुए हैं, जिसे हम बाइबल कहकर सम्बोधित करते हैं। बाइबल यूनानी भाषा का एक शब्द है और इसका अर्थ है एक पुस्तक। हमलों से मेरा अर्थ है कि इस पुस्तक को झूठा ठहराने और इसे नष्ट करने के शताब्दियों से लोगों ने बड़े-बड़े प्रयत्न किये हैं। परन्तु यह पुस्तक एक ऐसी वस्तु के समान है जिसे जितना अधिक घिसा जाए उतनी ही अधिक वह और चमकने लगती है। यदि पहिले इस पुस्तक में विश्वास करनेवालों की संख्या लाखों में थी तो आज करोड़ों में है। हर सम्भव साधन के द्वारा संसार भर में इस पुस्तक का प्रचार किया जा रहा है। अनेक देशों में टेलेविज़न और रेडियो के द्वारा और संसार भर में डाक के माध्यम से लोग इस पुस्तक के बारे में सीख रहे हैं। संसार में प्रत्येक लाइब्रेरी इस पुस्तक के बिना अधूरी है। वे जो इस पुस्तक में विश्वास रखते हैं वे इस में लिखी बातों के प्रचार के लिये हज़ारों वा लाखों रुपए दान में दे रहे हैं। क्योंकि उनका विश्वास है कि इस पुस्तक में लिखी बातें संसार में प्रत्येक मनुष्य के लिये आवश्यक हैं। यह पुस्तक वास्तव में बड़ी अद्भुत है। जिन लोगों ने इस पुस्तक को पढ़ा है उनका पूरा विश्वास है कि यह पुस्तक परमेश्वर का वचन है। सबसे पहिले, इसलिये क्योंकि जिन बातों को हज़ारों वर्ष पूर्व इस पुस्तक में लिखा गया था वे सब ठीक वैसे ही बाद में पूरी हुईं। और दूसरे, इसलिये क्योंकि जब से मनुष्य ने लिखना वा पढ़ना सीखा है असंख्य पुस्तकों

की रचना संसार में हो चुकी है परन्तु कोई भी लेखक आज तक ऐसी पुस्तक नहीं लिख पाया जैसी कि बाइबल है। मनुष्य चित्रकारी कर सकता है। वह अच्छे-अच्छे पेड़-पौधे चित्रों में बना सकता है। परन्तु कोई भी मनुष्य ऐसे पौधे तथा पेड़ पैदा नहीं कर सकता जिनमें रंग-बिरंगे फूल और भांति-भांति के फल लगते हैं। यह काम केवल परमेश्वर ही कर सकता है। इसी प्रकार, मनुष्य पुस्तकें लिख सकता है, परन्तु कोई भी मनुष्य कभी कोई ऐसी पुस्तक नहीं लिख पाया जो बाइबल से अच्छी या बाइबल के समान हो। क्योंकि बाईबल को परमेश्वर ने लिखा है। और अन्तिम, परन्तु सबसे महत्वपूर्ण बात इस सम्बन्ध में यह है, कि बाइबल स्वयं कहती है, कि इस पुस्तक में लिखी हुई बातें परमेश्वर का वचन है। बाइबल में छियासठ पुस्तकें हैं, और इन पुस्तकों को सम्बोधित करके बाइबल का लेखक यों कहता है : "हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।" (२ तीमुथियुस ३:१६,१७)। "क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्तजन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।" (२ पतरस १:२१)। अर्थात्, बाइबल को लिखवाने के लिये परमेश्वर ने विभिन्न मनुष्यों के मुँह तथा हाथों का उपयोग किया, परन्तु जो कुछ वे लोग बोलते या लिखते थे वह सब परमेश्वर की ओर से होता था, क्योंकि वे पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।

सो हम देखते हैं, कि बाइबल वास्तव में एक बड़ी ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। यह पुस्तक हमें संसार की उत्पत्ति के बारे में बताती है। इस में लिखा है, कि आदि में परमेश्वर ने सम्पूर्ण सृष्टि की रचना

की। परमेश्वर ने कहा, और वैसा ही हो गया। मित्रो, सृष्टि बड़ी ही अद्भुत है। क्या आप जानते हैं, कि यदि हम सूरज के थोड़ा भी और निकट होते तो हम सब जलकर नाश हो चुके होते, या सूरज हमारी पृथ्वी के थोड़ा सा भी और दूरी पर होता तो हम सब ठंड के कारण नाश हो जाते। परन्तु कुछ लोग सोचते हैं कि यह अद्भुत सृष्टि अपने ही आप बनकर अस्तित्व में आ गई। ताज महल संसार की सात अद्भुत वस्तुओं में से एक है। परन्तु क्या यह अद्भुत इमारत अपने ही आप बनकर अस्तित्व में आ गई? यद्यपि हम में से किसी ने भी उस मनुष्य को नहीं देखा है जिसने इस सुन्दर इमारत को बनवाया था और चाहे हमें उस मनुष्य का नाम भी मालूम न होता। तौभी हम में से कोई यह नहीं कहेगा कि यह इमारत अपने ही आप बनकर खड़ी हुई है। क्योंकि हर एक घर का कोई न कोई बनानेवाला है। और इस अद्भुत सृष्टि का बनानेवाला परमेश्वर है। क्योंकि बाइबल हमें बताती है, कि परमेश्वर ने आदि में आकाश और पृथ्वी की, और जो कुछ उनमें है सबकी सृष्टि की। (उत्पत्ति १)। बाइबल कहती है "आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।" (भजन संहिता १९:१)।

यह पुस्तक हमें बताती है कि परमेश्वर आत्मा है, और वह पवित्र है। (यूहन्ना ४:२४; यशायाह ६:३)। जगत की सृष्टि करने के बाद, परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप तथा समानता पर उत्पन्न किया। अर्थात् उसने मनुष्य को अपने आत्मिक स्वरूप पर और अपने समान पवित्र बनाया। (उत्पत्ति १:२६, २७)। बाइबल हमें बताती है, कि आरम्भ में परमेश्वर ने पहिले मनुष्य को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया। (उत्पत्ति २:७)। अर्थात्, पृथ्वी पर रहने के लिये परमेश्वर ने

मनुष्य को देह दी, और उसे आत्मिक जीवन देकर उसने मनुष्य को अपने स्वरूप तथा समानता पर उत्पन्न किया।

परन्तु, फिर बाइबल हमें बताती है, कि कुछ समय पश्चात् मनुष्य ने परमेश्वर के साथ चलना छोड़ दिया, और इस प्रकार वह परमेश्वर की समानता के स्तर से नीचे गिर गया। (उत्पत्ति ३)। बाइबल के अनुसार, परमेश्वर के साथ चलने का अर्थ है उसकी आज्ञाओं के अनुसार चलना (उत्पत्ति ६)। परन्तु मनुष्य परमेश्वर की आज्ञानुसार नहीं चला। और बाइबल कहती है, कि इसलिये कि क्योंकि कोई भी मनुष्य परमेश्वर के साथ नहीं चलता; और सभी मनुष्य उसकी आज्ञाओं को तोड़कर पाप करते हैं, इसलिए वे सबके सब उसकी महिमा से रहित हैं। (रोमियों ३:२३; १ यूहन्ना ३:४)।

यह पुस्तक, बाइबल हमें बताती है, कि परमेश्वर ने सब मनुष्यों के लिये एक नियम बनाया है, अर्थात् सब उसके नियम अनुसार एक बार मरेंगे और फिर एक दिन सब का न्याय होगा। (इब्रानियों ९ : २७)। और फिर उस न्याय को सम्बोधित करके बाइबल कहती है, कि अधर्मी अनन्त दन्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। (मत्ती २५:४६)।

परन्तु धर्मी कौन है ? बाइबल कहती है कि "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं।" (रोमियों ३ : १०)। अर्थात्, कोई भी मनुष्य धर्मी नहीं है। परन्तु बाइबल हमें बताती है, कि हम धर्मी बन सकते हैं।

परमेश्वर की यह पुस्तक हमें बताती है, कि क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप तथा अपनी समानता पर उत्पन्न किया है, इसलिये वह मनुष्य से अपने समान प्रेम रखता है। वह चाहता है कि कोई भी मनुष्य नाश न हो परन्तु सब अनन्त जीवन में प्रवेश

करें। इस पुस्तक में एक जगह हम यों पढ़ते है : "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)।

बाइबल हमें परमेश्वर के पुत्र यीशु के अद्भुत जन्म, और उसके निष्पाप जीवन और उसके सामर्थपूर्ण कामों के विषय में बताती है। परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर की यह अद्भुत पुस्तक हमें बताती है, कि उसके होनहार के ज्ञानानुसार और उसकी ठहराई हुई मनसा के अनुसार उसका पुत्र यीशु कुछ लोगों की डाह और ईर्ष्या का शिकार बना। उन्होंने उसे पकड़ा और उस पर झूठे दोष लगाए और उसे रोमी सरकार की अदालता में इस उद्देश्य से लाकर खड़ा कर दिया कि वह मौत की सज़ा पाए। बाइबल कहती है, कि अदालत में यद्यपि यीशु में कोई दोष न पाया गया परन्तु तौभी उसने अपने पक्ष में या अपने आपको बचाने के लिये एक शब्द भी न कहा। और इस प्रकार यीशु ने स्वयं अपने आपको मौत के हवाले कर दिया।

फिर हम इस पुस्तक में पढ़ते हैं, कि किस प्रकार यीशु लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ के सामने एक क्रूस के ऊपर लटकाया गया। और जब वह मर गया तो कुछ लोगों ने उसकी लोथ को क्रूस के ऊपर से उतारकर उसे एक कब्र के भीतर गाड़ दिया। लगभग तीन दिन तक उस सारे नगर में सन्नाटा छाया रहा, और लिखा है कि यीशु की कब्र के ऊपर सरकारी पहरेदार पहरा दे रहे थे, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं कोई आकर यीशु की लोथ को कब्र में से निकाल न ले जाए। परन्तु तभी एक बड़ी ही ज़बरदस्त घटना घटी। बाइबल कहती है, कि अपनी मृत्यु के तीन दिन बाद यीशु फिर जी उठा और वह चालिस दिन तक इस पृथ्वी पर रहा, और अनेक लोगों ने उसे देखा और उससे बातें कीं। परन्तु फिर वह उनके देखते-

देखते स्वर्ग पर वापस उठा लिया गया। (मत्ती २८ ; प्रेरितों १ : १—११)।

बाइबल कहती है, कि इस प्रकार अपने पुत्र को क्रूस के ऊपर बलिदान करके परमेश्वर ने उसे हमारे पापों का प्रायश्चित ठहराया। (१ यूहन्ना ४ : १०)। यीशु हमारे पापों के कारण क्रूस के ऊपर मारा गया। (रोमियों ५ : ८)। परमेश्वर की पुस्तक हमें बताती है, कि यद्यपि कि उसके पुत्र में कोई पाप न था, किन्तु तौभी हमें पाप से मुक्ति दिलाने के लिये, उसने हम सबके पापों को लेकर उसके ऊपर उस बोझ को रख दिया, और उसे हमारे पापों के कारण बलिदान करवाया, ताकि हम उसमें होकर धर्मी बन जाएं। (रोमियों ६ : २३; २ कुरिन्थियों ५ : २१)।

परमेश्वर के नियमानुसार एक न एक दिन हम सब को मरना है, और फिर वह सब दिनों का दिन आएगा, जिस दिन हम सब उसके न्यायासन के सामने खड़े होंगे। क्या उस दिन आप प्रभु के सामने धर्मियों के बीच होंगे या अधर्मियों के? बाइबल कहती है, कि जिन्होंने मसीह में यह विश्वास कर लिया है कि वह हमारे पापों के लिये मर गया, और अपने पूर्व जीवन से मन फिरा लिया है, और पानी में बपतिस्मा लेकर मसीह की मृत्यु और उसके गाड़े जाने और जी उठने की समानता को पहिन लिया है, परमेश्वर उन्हें न्याय के दिन मसीह के कारण धर्मियों में गिनेगा।

मित्रो, बाइबल वास्तव में एक अद्भूत पुस्तक है। यह पुस्तक हमें बताती है कि परमेश्वर ने हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को बलिदान कर दिया। इस पुस्तक में हमें यह सुसमाचार मिलता है कि हम मसीह में होकर धर्मी बन सकते हैं। क्या आप इस पुस्तक को परमेश्वर का वचन स्वीकार करते हैं? क्या आप इस पुस्तक पर विश्वास करते हैं? परमेश्वर अपने वचनानुसार चलने के लिये आपको सामर्थ दे।

आश्चर्यपूर्ण बाइबल

मित्रो !

इस कार्यक्रम में हम बाइबल का अध्ययन करते हैं। हम देखते हैं कि बाइबल हमें क्या सिखाती है। बाइबल का अर्थ है, "एक पुस्तक।" परन्तु यद्यपि बाइबल एक साधारण सी पुस्तक है, अर्थात् इसे कोई भी ध्यान से पढ़कर समझ सकता है, तौभी यह एक बड़ी ही अद्भुत तथा विचित्र पुस्तक है। यूँ तो हमारा संसार अनेक पुस्तकों से भरा पड़ा है परन्तु कोई भी पुस्तक बाइबल के समान नहीं है। उदाहरण के लिये, क्या आप किसी ऐसी पुस्तक के बारे में जानते हैं, जिसे लिखने में डेढ़ हज़ार वर्ष लगे हों ? बाइबल को लिखने में लगभग सोलह सौ वर्ष का समय लगा ! फिर, क्या आप किसी ऐसी पुस्तक के बारे में जानते हैं, जिसे चालीस लेखकों ने लिखा हो ? बाइबल को लगभग चालीस लेखकों ने लिखा है। क्या आपको किसी ऐसी पुस्तक का ज्ञान है, जो संसार की लगभग सभी भाषाओं में प्राप्त की जा सकती है ? बाइबल ही केवल एक ऐसी पुस्तक है जिसे विश्व की लगभग सभी भाषाओं में प्राप्त किया जा सकता है। क्या आप किसी ऐसी पुस्तक के सम्बन्ध में जानते हैं जिसे लोगों ने हर प्रकार से नाश करने का प्रयत्न किया हो, परन्तु उस पर जितने हमले हुए हों उतना ही अधिक उसका महत्व और बढ़ गया हो ? बाइबल एक ऐसी ही पुस्तक है। रोम में सन् तीन–सौ–एक में डिओक्नीशन नाम का एक सम्राट हुआ था। उसने बाइबल की एक-एक प्रति को संसार से हमेशा के लिये मिटा डालने का निश्चय

किया था। वह मसीही लोगों का तथा बाइबल का बड़ा ही कट्टर शत्रु था। उसने बाइबल पर विश्वास करनेवाले अनेक लोगों पर बड़े-बड़े अत्याचार करे, और बाइबल की जितनी भी प्रतियां उसके हाथ लगीं उसने उन्हें नष्ट कर दिया। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि जब उस सम्राट की मृत्यु हो गई तो कुछ ही वर्ष पश्चात् उसी स्थान पर एक इमारत खड़ी करवाई गई जहां उसकी कब्र थी, और उसके भीतर लोग इकट्ठा होकर परमेश्वर की उपासना करते थे और बाइबल पढ़ते थे। शायद आपने वोलटायर का नाम सुना होगा। यह मनुष्य फ्रांस का रहनेवाला था। वोलटायर बाइबल का बहुत बड़ा शत्रु था, और उसने यह घोषणा की थी कि आनेवाले सौ वर्षों के भीतर बाइबल तो क्या बाइबल का नाम तक भी संसार में किसी को स्मरण न रहेगा। परन्तु यह जानकर आपको आश्चर्य होगा, कि अठारहवीं शताब्दी में जिस वोलटायर ने बाइबल के अस्तित्व को मिटा डालने की घोषणा की थी, आज उसी मनुष्य के घर के बाहर जेनेवा बाइबल सोसाईटी का बोर्ड लगा हुआ है। उसका घर आज बाइबल सोसाईटी का दफ़्तर है, और वहां से करोड़ों की संख्या में बाइबल की प्रतियां संसार भर में इधर-उधर भेजी जाती हैं!

वास्तव में बाइबल एक ऐसी वस्तु के समान है जिसे जितना अधिक पीटा जाए उतनी ही अधिक वह और चमकने लगती है। समय-समय पर इस पुस्तक पर ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक दृष्टि-कोण के हमले अकसर होते ही रहते हैं, और यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया जाता है कि बाइबल झूठी है। कुछ समय पूर्व बाइबल की इस बात पर विश्वास नहीं किया जाता था, जैसे कि बाइबल में अय्यूब २६:७ में लिखा है, कि परमेश्वर ने पृथ्वी को बिना किसी टेक या सहारे के लटका रखा है। क्योंकि लोगों का विश्वास था कि पृथ्वी किसी वस्तु के ऊपर टिकी हुई है। ऐसे ही कुछ समय

पूर्व इस बात पर भी विश्वास नहीं किया जाता था कि पृथ्वी एक घेरे के समान गोल है, जैसे कि बाइबल में, यशायाह ४०:२२ में, लिखा है। क्योंकि लोगों का मत था कि पृथ्वी लम्बी और समतल है। परन्तु अब ये दोनों ही बातें स्वीकार कर ली गई हैं, अर्थात् पृथ्वी किसी भी वस्तु के ऊपर टिकी हुई नहीं है, और पृथ्वी गोल है। बाइबल के पहिले ही पृष्ठ पर हम इसी प्रकार की एक और बात को पढ़ते हैं। लिखा है, कि परमेश्वर ने सूरज को बनाने से पहिले उजियाले को बनाया, अर्थात् उजियाला सूरज से पहिले विद्यमान् था। परन्तु हमारे वैज्ञानिक इस बात को मानने को तैयार न थे, और बाइबल के इस कथन का उपहास उड़ाते थे। परन्तु आज ऐसा नहीं है, क्योंकि अब विज्ञान ने मान लिया है कि सूरज के चमकने से पहिले पृथ्वी पर उजियाला मौजूद था।

इसी प्रकार, ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी इस पुस्तक पर अक्सर हमले होते रहे हैं। बाइबल में हम ऊर और पितोम नाम के नगरों के बारे में पढ़ते हैं। बाइबल कहती है कि इब्राहीम पहिले ऊर नाम के नगर में रहता था; और जब फिरौन ने मिस्र देश में इस्राएलियों पर अत्याचार करना आरम्भ किया था तो उसने उनसे पितोम नाम के एक नगर में भंडार बनवाने का काम लिया था। परन्तु क्योंकि संसार के इतिहास की अन्य पुस्तकों में पितोम और ऊर नगरों का वर्णन नहीं मिलता, इसलिये ऐतिहासिक दृष्टिकोण से बाइबल में इन दोनों नगरों के वर्णन को गलत कहा जाने लगा। किन्तु बात केवल समय की थी। सो कुछ ही समय पश्चात् जब मिस्र में एक स्थान पर खुदाई का काम चल रहा था तो न केवल पितोम नगर के अवशेष परन्तु ठीक वैसे ही भन्डार उस स्थान पर खुदाई में निकले जैसे कि बाइबल कहती है कि इस्राएलियों ने बहां बनाए थे। ठीक ऐसे ही

खुदाई के द्वारा ऊर नगर का भी पता चला। परन्तु ऐसे अनेक अन्य उदाहरण भी यहाँ दिए जा सकते हैं।

तौभी इन उदाहरणों से मेरा अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि मैं आपके सामने यह साबित करूं कि बाइबल एक विज्ञान या इतिहास की पुस्तक है। परन्तु मेरे कहने का अर्थ यह है, कि बाइबल वास्तव में एक बड़ी ही विचित्र तथा अद्भुत पुस्तक है। जिसे आज तक न कोई नष्ट कर पाया है और न कोई झूठा ठहरा पाया है, यद्यपि कि इस पुस्तक को नष्ट करने और झूठा प्रमाणित करने के अनेक प्रयत्न होते रहे हैं। परन्तु दूसरी ओर, इस पुस्तक का महत्व संसार में दिन-प्रति-दिन बढ़ता जा रहा है। हर साल छपनेवाली पुस्तकों में सबसे अधिक छपनेवाली पुस्तक बाइबल है। यह पुस्तक कभी पुरानी नहीं होती। इसमें जिन बातों को हजारों वर्ष पूर्व लिखा गया था उन्हें आज भी वैसे ही छापा जाता है। कभी-कभी कोई-कोई पुस्तक बड़ी ही प्रसिद्ध हो जाती है। परन्तु किसी भी पुस्तक की प्रसिद्धी पच्चीस वर्ष से अधिक समय तक नहीं रहती। किन्तु बाइबल आज भी वैसे ही प्रसिद्ध है जैसे कि आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व थी। संसार के कुछ देशों ने इस पुस्तक की बिक्री पर रोक लगा दी है, परन्तु वहाँ ऐसे-ऐसे लोग हैं जो इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिये मुंह मांगा दाम देने को तैयार हैं।

परन्तु ऐसा क्यों है ? क्यों इतना विरोध होते हुए भी लोग इस पुस्तक को अपनी जान से भी अधिक प्यारा समझते हैं ? क्यों इस पुस्तक की संसार भर में इतनी बड़ी मांग है ? क्यों इस पुस्तक को अन्य सभी पुस्तकों से अधिक बढ़कर माना और पढ़ा जाता है ? क्यों इस पुस्तक में लिखी बातों का प्रचार करने के लिए करोड़ों रुपए प्रति वर्ष खर्च किए जाते हैं ?

मित्रो, यदि बाइबल परमेश्वर के वचन की पुस्तक न होती, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि आज इस पुस्तक का जगत में कहीं नाम-ओ-निशान तक नहीं पाया जाता। यह पुस्तक कब की मिट चुकी होती। परन्तु वास्तव में बाइबल परमेश्वर का वचन है, अर्थात् इस पुस्तक को परमेश्वर ने लिखवाकर मनुष्य को दिया है। जब तक मनुष्य इस पृथ्वी पर विद्यमान् है यह पुस्तक भी अवश्य ही विद्यमान् रहेगी। क्योंकि परमेश्वर ने इस पुस्तक को मनुष्य के लिए लिखवाया है, ताकि मनुष्य इसमें लिखी बातों पर चलकर उसके पास वापस लौट आए। पवित्र बाइबल में एक स्थान पर लिखा है "क्योंकि हर एक प्राणी घास की नाईं है, और उसकी सारी शोभा घास के फूल की नाईं है: घास सूख जाती है, और फूल झड़ जाता है। परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहेगा।" (१ पतरस १ : २३)।

क्या आपने बाइबल को स्वयं कभी पढ़ा है? इस पुस्तक में जीवन-दायक उपदेश है; महत्त्वपूर्ण आदेश है; इसमें शिक्षा का भंडार है। यह पुस्तक बताती है, कि मनुष्य जगत में कैसे आया, और मृत्यु पश्चात् उसका क्या होगा। इस पुस्तक में हम परमेश्वर की आवाज़ को सुनते हैं। यह पुस्तक हमें बताती है, कि परमेश्वर मनुष्य से इतना अधिक प्रेम करता है, कि जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये उसने अपने वचन को मनुष्य बनाकर बलिदान कर दिया। इस पुस्तक में हमें उद्धार पाने का मार्ग और स्वर्ग में प्रवेश करने का द्वार मिलता है। यदि आपने इस अद्भुत पुस्तक को नहीं पढ़ा है, तो आप परमेश्वर के वचन से अनजान हैं; आप इस बात से अज्ञान हैं कि परमेश्वर की इच्छा क्या है। परन्तु आप इस पुस्तक को ख़रीदकर अपनी ही भाषा में पढ़ सकते हैं।

यह पुस्तक परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य के लिए दी है। कई बार लोग इस पुस्तक को इसलिए नहीं पढ़ना चाहते क्योंकि वे सोचते हैं कि यह किसी "अन्य" धर्म की पुस्तक है। परन्तु वास्तव में यह सच नहीं है। बाइबल प्रत्येक मनुष्य की पुस्तक है, इस पुस्तक को परमेश्वर ने सबके लिए दिया है। इसीलिये, इस पुस्तक के अन्त में यों लिखा है: "धन्य है वह जो इस भविष्यद्वाणी के वचन को पढ़ता है, और वे जो सुनते हैं, और इसमें लिखी हुई बातों को मानते हैं।" (प्रकाशितवाक्य १ : ३)।

अब परमेश्वर अपने वचन के महत्व को समझने और उस पर चलने के लिए आप सबको आशीष दे।

बाइबल का लेखक कौन है ?

मित्रो,

यह हमारे बाइबल अध्ययन का समय है। बाइबल का अध्ययन हम इसलिये करते हैं, क्योंकि यह पुस्तक परमेश्वर के वचन की पुस्तक हैं। इस पुस्तक को परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है। बाइबल की छियासठ पुस्तकों को लगभग सोलह-सौ-वर्षों के भीतर ऐसे चालीस मनुष्यों ने लिखा था जिन्हें परमेश्वर की ओर से प्रेरणा मिली थी। क्योंकि परमेश्वर इन चालीस लोगों के द्वारा इस पुस्तक में केवल अपनी ही इच्छा को लिखवाना चाहता था, इसलिये उन लेखकों ने केवल वही लिखा जिसे परमेश्वर ने उनके ऊपर प्रगट किया था। यही कारण है कि उन्होंने इस पुस्तक में उस समय ऐसी-ऐसी बातों को लिखा जिनकी उस वक्त वे कल्पना तक भी नहीं कर सकते थे। उस समय वे लोग विश्वास करते थे कि पृथ्वी की उत्पत्ति एक अन्डे से हुई है। तथा पृथ्वी एक बड़ा ही विशाल जानवर है, जो धीरे-धीरे अपने पेट के बल खिसकता रहता है। मिस्र में उस समय सभी लोगों का यही विश्वास था। परन्तु मूसा, जिसका पालन-पोषण और पढ़ाई-लिखाई सब कुछ मिस्र में ही हुआ था, जब उसने परमेश्वर की प्रेरणा से बाइबल की सबसे पहिली पुस्तक को लिखना आरम्भ किया, तो सबसे पहिले उसने परमेश्वर की पुस्तक में यों लिखा : "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।" (उत्पत्ति १:१)। उस समय कौन जानता था कि उत्तर दिशा को परमेश्वर ने निराधार फैला रखा है, अर्थात् उत्तर दिशा में सितारे

इत्यादि नहीं हैं ? अपने आज के आधुनिक युग में हम एक बड़े टेलेस्कोप की सहायता से दक्षिण और पूरब और पश्चिम दिशाओं में लाखों सितारों को देख सकते हैं । परन्तु उत्तर में जब हम टेलेस्कोप को घुमाते हैं तो हमें कुछ नज़र नहीं आता, क्योंकि उत्तर दिशा खाली है । परन्तु आज से हज़ारों वर्ष पूर्व, जबकि न तो टेलेस्कोप थे और न विज्ञान, बाइबल के लेखक को किस प्रकार पता चल गया कि उत्तर दिशा खाली है ? क्योंकि बाइबल में अय्यूब की पुस्तक के २६:७ में हम इस प्रकार पढ़ते हैं : "वह (अर्थात् परमेश्वर) उत्तर दिशा को निराधार फैलाए रखता है।" और न केवल यह परन्तु इसी जगह वह यह भी कहता है, कि परमेश्वर "बिना टेक पृथ्वी को लटकाए रखता है।" अब यह बात बाइबल की पुस्तक के लेखक को उस समय कैसे मालूम हो गई कि पृथ्वी किसी भी वस्तु के सहारे टिकी हुई नहीं है, जबकि लोग उस समय यह विश्वास करते थे कि पृथ्वी या तो मज़बूत खम्भों के ऊपर टिकी हुई है या ऐटलस के ऊपर ?

इसी प्रकार के दर्जनों अन्य उदाहरण भी हम देख सकते हैं। किन्तु यह बात बड़ी ही विचारपूर्ण है, कि जिन बातों के बारे में हमें अभी कुछ ही वर्ष पूर्व, वैज्ञानिक खोजों के बाद, ज्ञान हुआ है, इन सब के विषय में बाइबल के लेखकों ने आज से हज़ारों वर्ष पूर्व बाइबल में कैसे लिख डाला ? क्या इस बात का हमारे पास केवल एक ही उत्तर नहीं है, अर्थात् यह, कि बाइबल को मनुष्यों ने नहीं परन्तु परमेश्वर ने लिखा है ?

फिर, यदि बाइबल को परमेश्वर ने न लिखा होता, तो इसकी पुस्तकों में सैकड़ों वर्ष पूर्व लिखी हुई बातें ठीक वैसे ही बाद में किस प्रकार पूरी होतीं ? अर्थात्, कुछ बड़ी ही महत्वपूर्ण घटनाएं जो

इतिहास में पूरी हुई हैं वे बिल्कुल ठीक वैसे ही घटी हैं जैसे की बाइबल में उनके सम्बन्ध में सैकड़ों वर्ष पूर्व कहा गया था। जी हाँ, इससे मेरा अभिप्राय बाइबल की भविष्यद्वाणियों से है। और यहां मैं आपके सामने उनमें से कुछ का वर्णन करने जा रहा हूं। इनमें से एक बड़ी ही महत्त्वपूर्ण भविष्यद्वाणी का वर्णन हमें बाइबल में व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के २८ वें अध्याय में मिलता है। इस भविष्यद्वाणी को परमेश्वर ने मूसा से लिखवाया था और यह लगभग १५०० वर्ष बाद ठीक वैसे ही पूरी हुई।

यह भविष्यद्वाणी इस प्रकार थी, कि परमेश्वर यहूदियों के विरुद्ध दूर से, वरन पृथ्वी के छोर से वेग से उड़नेवाले उकाब की सी एक जाति को चढ़ा लाएगा। इस जाति की भाषा लोग न समझेंगे, और वे लोग न तो बूढ़ों पर दया करेंगे और न बालकों पर। मूसा ने लिखा था, कि वे यहूदियों के देश को चारों ओर से उस समय तक घेरे रखेंगे जब तक कि उसकी शहरपनाह की मज़बूत दीवारें गिरकर नाश न हो जाएंगी, और लोगों को बड़ें ही भयंकर तथा सकेती के समय का सामना करना पड़ेगा; और यहां तक कि लोग एक दूसरे का मांस खाने पर मजबूर हो जाएंगे। उसने आगे कहा था कि तब यहूदी दास बना लिए जाएंगे और मिस्र में उस समय तक दासत्व में बेचे जाएंगे जब तक कि उनका कोई ग्राहक न मिलेगा, और बाकी सब देशों में इधर-उधर तित्तर-बित्तर हो जाएंगे। फिर उसने लिखा था, कि वे किसी भी देश में चैन न पाएंगे और उनके पांव को ठिकाना न मिलेगा।

अब कौन इस बात से इन्कार कर सकता है, कि सन् ७० में, अर्थात् इस भविष्यद्वाणी के लिखे जाने के १५०० वर्ष पश्चात्, जब दूर से आकर रोमी सिपाहियों ने यरूशलेम के भीतर घुसकर यहूदियों पर अत्याचार किये तो वे इस भविष्यद्वाणी से भिन्न थे ? सन् ७० में

रोमी लोग दूर से आकर यरूशलेम पर उकाब की नाई झपट पड़े। वे एक अजनबी भाषा बोलते थे, और उन्होंने उस समय किसी पर भी दया न की। जोसेफ़स एक यहूदी था, वह एक ऐतिहासकार था, और संयोग से उस समय उसने स्वयं अपनी ही आँखों से उस सब अत्याचार को देखा था। वह लिखकर बताता है, कि रोमियों ने उस समय छोटे बच्चों तक को भी नहीं छोड़ा, परन्तु उन्हें छीनकर किले से नीचे फेंक दिया। वह यह भी बताता है, कि लोगों ने एक दूसरे का मांस खाया, और लाखों मारे गए, और उनमें से ९७,२०० बन्दी बनाए गए। और ये मिस्र में उस समय तक दासों की नाईं बेचे गए जब तक कि उनका कोई ख़रीदार न मिला। आज यहूदी संसार में सभी जगह पाए जाते हैं। परन्तु कौन सी जगह संसार में वे खुशहाल हैं? जब से उन्होंने मसीह को तुच्छ जाना है, उन्हें कहीं चैन नहीं है। कहीं मारे जाते हैं; कहीं सताए जाते हैं; तो कहीं से खदेड़े जाते हैं। वास्तव में, यदि सच कहा जाए तो संसार में यहूदी आज एक ऐसी जाति है जो इस बात का एक बहुत बड़ा जीविता प्रमाण है, कि बाइबल का लेखक कोई मनुष्य नहीं परन्तु सर्वशक्तिमान् तथा सर्वज्ञानी परमेश्वर है।

इसी प्रकार बाइबल में हम बाबुल और नीनवे जैसे बड़े-बड़े प्रसिद्ध नगरों के बारे में पढ़ते हैं। बाबुल २२३४ ई०पू० में बनवाया गया था। प्राचीनकाल में यह नगर अपनी भव्य इमारतों, कारीगरी और सुन्दरता के लिए दुनिया-भर में मशहूर था। इसी प्रकार नीनवे एक बड़ा ही शक्तिशाली तथा प्रसिद्ध नगर था। परन्तु परमेश्वर की प्रेरणा पाकर यशायाह, यहेजकेल, और नहूम और सपन्याह भविष्य-द्वक्ताओं ने इन प्रसिद्ध नगरों के विरुद्ध भविष्यद्वाणी करके यूं कहा था, कि वे इस प्रकार नाश हो जाएंगे कि फिर कभी न बसेंगे। यद्यपि प्राचीन-काल के बहुत से नगर संसार में अभी भी विद्यमान् है, परन्तु

बाबुल और नीनवे जैसे संसार के प्रसिद्ध नगरों के खंडहर आज भी बाइबल की भविष्यद्वाणियों की साक्षी दे रहे हैं। और आश्चर्य की बात तो यह है, कि जैसे बाइबल में लिखा है, कि इन प्रमुख नगरों का नाश होगा, ठीक वैसे ही उनके साथ हुआ। वास्तव में, यदि आप बाइबल में लिखी इस प्रकार की भविष्यद्वाणियों को स्वयं पढ़ें, और फिर उनके पूरा होने के बारे में इतिहास में देखें। तो संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो आपको रोक दे कि आप यह विश्वास न करें कि बाइबल को सचमुच में परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा ही लिखा गया है।

लगभग दो हज़ार वर्ष की बात है, कि पलस्तीन देश के यहूदा के बैतलहम में एक बालक का जन्म हुआ था। उस बालक का नाम यीशु रखा गया। जब वह बड़ा हुआ, तो लोग उसकी शिक्षाओं को सुनकर दंग रह गए; और उसके आश्चर्यपूर्ण कामों को देखकर बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया कि वह कोई मात्र मनुष्य नहीं है। प्रत्येक दिन यीशु की प्रसिद्धी यरुशलेम और आस-पास के नगरों में बढ़ती ही जा रही थी। लोग अपने धार्मिक अगुवों की न सुनकर यीशु को सुनने के लिए सैकड़ों और हज़ारों में उसके पास आने लगे। परन्तु यहूदियों के धार्मिक अगुवे यीशु की प्रसिद्धी के कारण उससे बैर रखने लगे। और तब एक दिन उन्होंने यीशु को पकड़कर उस पर झूठे आरोप लगाए, और रोमी सरकार को उसे क्रूस पर चढ़ाने को मजबूर कर दिया। परन्तु यीशु को मृत्यु भी न रोक पाई। क्योंकि वह जिस कब्र के भीतर मृत्यु पश्चात गाड़ा गया था, वह तीसरे दिन खाली पाई गई। अनेक लोगों ने यीशु को इसके बाद जीवित देखा और उसके साथ बातें कीं। चालीस दिन तक यीशु, जीवित होने के बाद, पृथ्वी पर रहा और फिर लोगों के देखते-देखते वह स्वर्ग पर वापस उठा लिया गया।

परन्तु क्या आपने कभी बाइबल के पुराने नियम को पढ़ा है ? बाइबल की ये पुस्तकें यीशु के जन्म से सैकड़ों वर्ष पूर्व लिखी गई थीं। किन्तु आप यह देखकर आश्चर्य-चकित रह जाएंगे कि यद्यपि दाऊद ने अपनी पुस्तक को यीशु के जन्म से एक-हज़ार-वर्ष पूर्व लिखा था; और यशायाह ने अपनी पुस्तक को यीशु के जन्म से आठ-सौ-वर्ष पहिले लिखा था। परन्तु यीशु के सम्बन्ध में उन्होंने उस समय जो कुछ लिखा था वह सब ठीक वैसे ही यीशु के जन्म, जीवन और उसकी मृत्यु और पुनःरुत्थान में पूरा हुआ। परन्तु यदि उन्होंने ये सब परमेश्वर की प्रेरणा से न लिखा होता, तो यह कैसे सम्भव हो सकता था ?

मित्रो, यह विषय वास्तव में एक ऐसा विषय है जिसके ऊपर न तो पूरी तरह से कभी कुछ लिखा जा सकता है और न कहा जा सकता है। परन्तु मेरा विश्वास है, कि जिन बातों को अभी मैंने आपके सामने रखा है आप अवश्य ही इन पर गम्भीरता के साथ विचार करेंगे।

परन्तु इससे पहिले कि हम अपने आज के पाठ को समाप्त करें, मैं एक बार फिर से आपका ध्यान इस बात पर दिलाना चाहता हूं, कि पवित्र बाइबल कहती है, कि यीशु मसीह परमेश्वर के होनहार के ज्ञान के अनुसार हम सब के पापों के प्रायश्चित के लिए क्रूस पर लटकाया गया। (प्रेरितों २ : २३; १ यूहन्ना ४ : १०)। इसलिए जो कोई मसीह में विश्वास लाएगा, और अपना मन फिराएगा, और अपने पापों की क्षमा के लिए मसीह में बपतिस्मा लेगा वह अपने पापों से उद्धार पाएगा। (मरकुस १६:१६; प्रेरितों २:३७, ३८)।

प्रभु अपने वचन को समझने और उस पर चलने के लिए आपकी अगुवाई करे।

बाइबल का उद्देश्य क्या है ?

मित्रो :

इस कार्यक्रम में हम उन बातों के सम्बन्ध में देखते हैं जिनके बारे में हमें बाइबल बताती है। बाइबल वास्तव में एक बड़ी ही विशेष पुस्तक है। यही कारण है कि शताब्दियों से प्रत्येक वर्ष यही पुस्तक सबसे अधिक छपती और बिकती है। किन्तु, क्या आपने बाइबल के बारे में कभी इस प्रश्न पर विचार किया है, कि संसार में लगभग सभी भाषाओं में सबसे अधिक पढ़ी जानेवाली इस पुस्तक का उद्देश्य क्या है ? अर्थात, किस उद्देश्य के लिये इस पुस्तक को लिखा गया है ? इस पुस्तक को पढ़कर हम देखते हैं, कि इसमें छियासठ अलग-अलग किताबें हैं जिन्हें चालीस लोगों के द्वारा लिखा गया है। परन्तु विशेष बात यह है, कि यह पुस्तक हमें बताती है कि उन चालीस लेखकों ने इन छियासठ पुस्तकों को स्वयं अपने ज्ञान से नहीं परन्तु परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा लिखा था। (२ पतरस १:२०–२१)। और यह बात इस वास्तविकता से प्रमाणित भी हो जाती है, कि यद्यपि कि ये चालीस लोग अधिकांश रूप से एक दूसरे से अपरिचित थे, अर्थात् उन सबका सोलह-सौ-वर्षों के भीतर अनेक देशों में जन्म हुआ था, उनकी भाषा और संस्कृति अलग-अलग थी, परन्तु तौभी बाइबल की इन सभी पुस्तकों का मूल उद्देश्य एक समान है। जैसे कि हम देखते हैं कि, जिस बात को मूसा ने मसीह से १५०० वर्ष पहिले बाइबल की पुस्तक में लिखा था। उसी बात के विषय में दाऊद एक अन्य देश में ५०० वर्ष के बाद लिखता है, और फिर

लगभग २०० वर्ष के बाद उसी सम्बन्ध में यशायाह अपनी पुस्तक में लिखता है। ऐसे ही इन चालिस लेखकों ने सोलह-सौ-वर्षों के भीतर बाइबल की पुस्तकों में जो कुछ भी लिखा, उन सब बातों का एक ही विषय था। इस बात को ध्यान में रखकर, हम बाइबल के लेखक के साथ केवल इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, कि सम्पूर्ण बाइबल में जो कुछ भी लिखा गया है वह सब परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा ही लिखा गया है। परन्तु आज हम इस विशेष प्रश्न पर विचार करना चाहते हैं, कि बाइबल का उद्देश्य क्या है, अर्थात् परमेश्वर ने बाइबल को किस उद्देश्य से लिखवाया है ?

परमेश्वर को प्रगट करने के लिये

इस सम्बन्ध में सबसे पहिली बात हम यह देखते हैं, कि बाइबल मनुष्य के ऊपर सच्चे परमेश्वर को प्रगट करती है। यूं तो परमेश्वर के ज्ञान का अनुभव मनुष्य को सृष्टि से भी होता है। जैसे कि पवित्र बाइबल का लेखक एक जगह बताता है, कि, "आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाश-मण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।" (भजन संहिता १९ : १)। परन्तु बाइबल हमें बताती है, कि वह परमेश्वर कौन है, उसकी हमारे लिये क्या इच्छा है, उसके हमारे लिये क्या नियम हैं, और वह आज हमसे क्या चाहता है ? बाइबल हमें परमेश्वर के स्वभाव के बारे में बताती है, अर्थात् परमेश्वर प्रेम है, और वह मनुष्यों से ऐसा प्रेम रखता है कि उसने हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने वचन को मनुष्य बनाकर पृथ्वी पर भेज दिया और उसे हमारे पापों के कारण क्रूस के ऊपर बलिदान किया।

मसीह को प्रगट करने के लिये

परन्तु न केवल बाइबल हमारे ऊपर परमेश्वर को ही प्रगट करती

है, लेकिन उसके पुत्र मसीह यीशु को भी प्रगट करती है। बाइबल हमें बताती है कि मसीह परमेश्वर का पुत्र था (है) क्योंकि उसने परमेश्वर की सामर्थ से पृथ्वी पर जन्म लिया था (मत्ती १ : १८; यूहन्ना १ : १—१४)। बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये भेजा था ताकि वह अपनी मृत्यु के द्वारा जगत के पापों का प्रायश्चित करे। (१ यूहन्ना ४ : १०)। हम बाइबल में पढ़ते हैं, कि परमेश्वर के पुत्र मसीह का जन्म कितने अद्भुत ढंग से हुआ; उसका जीवन सभी अन्य मनुष्यों से भिन्न था; उसने कभी कोई पाप नहीं किया; वह एक सिद्ध मनुष्य था। बाइबल हमें बताती है, कि मसीह ने बड़ी-बड़ी महत्वपूर्ण शिक्षाएं दीं, और बड़े-बड़े, सामर्थपूर्ण काम किए, जिन्हें सुनकर और देखकर अनेक लोगों ने स्वीकार किया कि मसीह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। परन्तु न केवल मसीह के जन्म और जीवन के ही सम्बन्ध में हम इस पुस्तक में पढ़ते हैं, किन्तु यह पुस्तक हमें यह भी बताती है, कि किस प्रकार परमेश्वर का पुत्र उसकी मनसा से क्रूस के ऊपर मारा गया और फिर अपनी मृत्यु के तीन दिन के बाद वह किस प्रकार फिर से जी उठा।

मनुष्य को प्रगट करने के लिये

इसी प्रकार, बाइबल हमारे ऊपर मनुष्य को प्रगट करती है, अर्थात् बाइबल हमें बताती है, कि मनुष्य कौन है, उसका आदि क्या है, वह पृथ्वी पर कहां से आया, और मृत्यु के बाद उसका क्या होता है? बाइबल कहती है, कि आरम्भ में सृष्टि की रचना करने के बाद परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की। उसने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया और आरम्भ में उन्हें नर और नारी करके बनाया। (उत्पत्ती १ : २७)। सो बाइबल के अनुसार, मनुष्य एक आत्मिक प्राणी है, क्योंकि वह परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया

है, और इसलिये आत्मा के भाव से वह हमेशा जीवित रहेगा। इसमें कोई संदेह नहीं, कि जिस प्रकार मनुष्यों में जीवन है वैसे ही पशुओं और पेड़-पौधों में भी है—परन्तु मनुष्यों की तरह उनमें आत्मा नहीं है, क्योंकि परमेश्वर ने केवल मनुष्य को ही अपने आत्मिक स्वरूप पर बनाया है। सो क्योंकि मनुष्य एक आत्मिक प्राणी है, और उसे अच्छे तथा बुरे का ज्ञान है; और क्योंकि परमेश्वर ने उसे अपनी इच्छा तथा आज्ञाएं दी हैं, और क्योंकि वह हमेशा तक बना रहेगा। इसलिये बाइबल बताती है, कि हर एक मनुष्य एक दिन परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा। (रोमियों १४:१२)। और जिन्होंने भलाई की है और परमेश्वर की आज्ञाओं को माना है वे अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे; परन्तु जिन्होंने बुराई की है और परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं माना है वे अनन्त दन्ड भोगेंगे। (मत्ती २५ : ४६; यूहन्ना ५ : २९)।

पाप को प्रगट करने के लिये

परन्तु, फिर बाइबल को लिखे जाने का एक अन्य उद्देश्य हमें इस बात में मिलता है, कि बाइबल पाप को प्रगट करती है, अर्थात् बाइबल हमें बताती है कि वास्तव में पाप क्या है। मनुष्य पाप केवल उसी वस्तु को कहता है, जो नैतिक दृष्टिकोण से अनुचित है। और इसमें कोई संदेह नहीं कि शरीर के जितने भी काम हैं वे सभी पाप हैं, बाइबल का लेखक एक जगह इस प्रकार कहता है : "क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे ? धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्ति पूजक, न पर स्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी। और न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।" (१ कुरिन्थियों ६ : ९, १०) परन्तु बाइबल इस सम्बन्ध में हमें यह

भी बताती है, कि न केवल मनुष्य शरीर के कामों के ही द्वारा पाप करता है, परन्तु यदि मनुष्य परमेश्वर की आज्ञाओं पर न चले तो यह भी पाप है। बाइबल कहती है, "जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है; और पाप तो व्यवस्था का विरोध है।" (१ यूहन्ना ३ : ४)। सो परमेश्वर की इच्छा के विरोध में चलना, या उसकी आज्ञाओं को तोड़ना या उन्हें न मानना भी पाप है। यही कारण है कि हम में से हर एक को बाइबल को पढ़ना चाहिए, या जो लोग स्वयं नहीं पढ़ सकते उन्हें सुनना चाहिए, क्योंकि इस पुस्तक में उसने हमें अपनी इच्छा तथा आज्ञाओं को लिखवाकर दिया है। परन्तु यदि हम बाइबल को न तो पढ़ते हैं और न सुनते हैं, तो इस प्रकार हम परमेश्वर की इच्छा से अनजान रहते हैं, और परिणाम यह होता है कि हम अपना जीवन उसकी इच्छा के विरोध में व्यतीत करते हैं; यह पाप है। इसी प्रकार बाइबल एक अन्य स्थान पर यों कहती है, "इसलिये जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिये यह पाप है।" (याकूब ४ : १७)। सो बाइबल हमें बताती है, कि जैसे कि सब प्रकार का अधर्म पाप है, वैसे ही परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करना; उसकी आज्ञाओं को न मानना, और यह जानते हुए कि भला क्या है परन्तु उसे न करना भी पाप है।

उद्धार को प्रगट करने के लिए

किन्तु न केवल बाइबल परमेश्वर, और उसके पुत्र मसीह, और मनुष्य तथा पाप को ही प्रगट करती है, परन्तु इन सबके ऊपर बाइबल उद्धार को भी प्रगट करती है। अर्थात्, परमेश्वर ने बाइबल को लिखवाकर मनुष्यों को इसलिये दिया है, ताकि मनुष्य जाने कि न केवल वह पाप के कारण नाश ही हो सकता है, परन्तु वह अपने पाप

से उद्धार भी प्राप्त कर सकता है। बाइबल हमें बताती है, कि परमेश्वर ने अपने पुत्र मसीह को हमारे पापों के लिये क्रूस के ऊपर चढ़वाकर बलिदान किया। बाइबल कहती है, कि क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है (रोमियों ६:२३), और क्योंकि सभी मनुष्य पापी हैं (रोमियों ३:२३), इसलिये परमेश्वर ने अपने ही पुत्र को जगत में भेजकर उसे प्रत्येक मनुष्य के पाप के बदले में मृत्यु दण्ड दिया (यूहन्ना ३:१६), अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह हमारे पापों का प्रायश्चित है। (१ यूहन्ना ४:१०)। परन्तु न केवल बाइबल हमें यही बताती है कि मसीह हमारे पापों का प्रायश्चित है, किन्तु परमेश्वर की यह पुस्तक हमें यह भी बताती है कि हम किस प्रकार अपने लिये उस उद्धार को प्राप्त कर सकते हैं जो हमें मसीह में मिल सकता है। बाइबल कहती है, कि यदि कोई भी मनुष्य परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में यह विश्वास लाता है कि वह मेरे पापों के लिये क्रूस पर मारा गया। तो उसे अपने पापों तथा पूर्व जीवन से मन फिराना चाहिए, और फिर अपने सब पापों की क्षमा के लिये उसे बपतिस्मा लेना चाहिए। (मरकुस १६:१६; प्रेरितों २:३८)। इसका अर्थ यह है, कि जब मनुष्य यीशु मसीह पर यह विश्वास लाता है, कि वह मेरे पापों के लिये मर गया तो वह जानता है कि अब परमेश्वर मुझे मेरे पापों के लिये दोषी नहीं ठहराएगा, क्योंकि यीशु ने मेरे सब पापों का प्रायश्चित कर दिया है। और जब वह अपना मन फिराता है तो वह यह निश्चय करता है, कि अब आगे को मैं पाप का जीवन नहीं बिताऊँगा। और जब वह बपतिस्मा लेने के द्वारा अपने पापों की क्षमा के लिये जल के भीतर गाड़े जाने के बाद उसमें से बाहर आता है, तो वह जानता है कि अब मैंने अपने पुराने मनुष्यत्व को मसीह की मृत्यु की समानता में दफ़ना दिया है, और अब मैं मसीह में होकर एक नए जीवन की चाल चलूंगा। सो बाइबल हमारे ऊपर

इस बड़े ही विशाल् तथा अद्भुत उद्धार को प्रगट करती है।

मित्रो, इस थोड़े से समय में मैंने आपको संसार की उस सबसे महान् पुस्तक के बारे में बताया जिसे हम बाइबल कहते हैं। इस पुस्तक को परमेश्वर ने, जैसा कि हमने देखा, इस उद्देश्य से मनुष्य को लिखवाकर दिया है, ताकि प्रत्येक मनुष्य यह जान ले कि हमारा परमेश्वर कौन है, और उसके पुत्र मसीह ने हमारे लिये क्या किया है ? ताकि हम जानें कि मनुष्य वास्तव में क्या है; और पाप क्या है, और किस प्रकार हम में से प्रत्येक मनुष्य अपने-अपने पापों से छुटकारा प्राप्त कर सकता है। और मेरा विश्वास है, कि यदि आपके पास परमेश्वर के वचन की पुस्तक नहीं है तो आप इस पुस्तक को अवश्य ही प्राप्त करके पढ़ेंगे। प्रभु आप सबको आशीष दे।

बाइबल पढ़ने के नियम

मित्रो !

अब यह समय हमारे बाइबल अध्ययन का है । बाइबल का अध्ययन हम इसलिए करते हैं क्योंकि यह परमेश्वर का वचन है, अर्थात् अपनी इच्छा को प्रगट करने के लिये इस पुस्तक को स्वयं परमेश्वर ने लिखवाया है । संसार में बाइबल के अतिरिक्त कोई भी अन्य पुस्तक यह दावा नहीं करती कि उसका रचनेवाला परमेश्वर है । केवल बाइबल ही एक ऐसी पुस्तक है जिसमें हम बड़े ही स्पष्ट शब्दों में पढ़ते हैं, कि इस पुस्तक का प्रत्येक शब्द परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा लिखा गया है । (२ तीमुथियुस ३ : १६, १७) । इसमें कोई संदेह नहीं, कि परमेश्वर ने बाइबल की पुस्तकों को लिखवाने में लगभग ४० मनुष्यों की लिखने की योग्यताओं का उपयोग किया । परन्तु उसने उन्हें अपना वचन दिया; उसने उन्हें लिखने के लिए प्रेरणा दी । सो इसलिए उन्होंने जो कुछ भी लिखा वह परमेश्वर की ओर से था । (२ पतरस १ : २१) । न केवल बाइबल इस बात का स्वयं दावा ही करती है, कि उसका रचयीता परमेश्वर है । परन्तु संसार भर में आज अनेक लोगों ने इस बात को स्वीकार भी कर लिया है । क्योंकि इस पुस्तक में सैकड़ों और हज़ारों वर्ष पूर्व कुछ बातों के सम्बन्ध में यों लिखा गया था कि वे भविष्य में पूरी होंगी, और जब समय पूरा हुआ तो वे सब अपने-अपने समय पर ठीक वैसे ही पूरी हुईं । जो बातें आज से सैकड़ों वर्ष बाद पूरी होने जा रही हैं उनका

पूरा-पूरा ज्ञान केवल परमेश्वर को ही हो सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य और भी अनेक ऐसे प्रमाण हैं जो इस सम्बन्ध में दिए जा सकते हैं। परन्तु हमारे आज के पाठ का उद्देश्य ऐसे प्रमाणों पर विचार करने का नहीं है। किन्तु आज हम अपने पाठ में बाइबल को पढ़ने के कुछ आवश्यक नियमों के ऊपर विचार करेंगे।

परमेश्वर का वचन होने के कारण बाइबल एक बड़ी ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। इसलिए आवश्यक है कि इस महत्वपूर्ण पुस्तक को बड़े ही ध्यान से और गम्भीरता के साथ पढ़ा जाए। यह सही है, कि बाइबल संसार में सभी अन्य पुस्तकों के अतिरिक्त सबसे अधिक छपती है, और लगभग सभी भाषाओं में छपती है; यह पुस्तक सभी अन्य पुस्तकों से अधिक बेची या ख़रीदी जाती है, और संसार में अधिकांश लोग इस पुस्तक पर विश्वास करते हैं और इसे पढ़ते हैं। परन्तु यह बात भी बिलकुल सही है कि संसार में केवल यही एक ऐसी पुस्तक है जिसे अधिकतर लोग ठीक से नहीं समझ पाते। क्योंकि वे इस पुस्तक को उचित ढंग से तथा नियमानुसार नहीं पढ़ते। परन्तु सच्चाई यह है, कि हम सब बाइबल को एक समान समझ सकते हैं और एक समान इसमें लिखी बातों के अनुसार चल सकते हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम सब उसके वचन को एक समान समझें और एक ही तरह से उसमें लिखी बातों पर विश्वास करके उसके अनुसार चलें। परमेश्वर नहीं चाहता कि आज संसार में चार सौ प्रकार की अलग-अलग कलीसियाएं हों; या भिन्न-भिन्न प्रकार के मसीही हों। न उसने हमें यह अधिकार दिया है कि हम उसकी पुस्तक में लिखी बातों पर अपनी-अपनी इच्छा वा समझ के अनुसार चलें। परन्तु उसने हमें स्पष्ट शब्दों में अपने वचन में बता दिया है, कि वह हमसे क्या चाहता है। किन्तु यदि आज संसार में धार्मिक दृष्टिकोण से गड़बड़ी और अव्यवस्था है तो इसके लिए दोषी

स्वयं मनुष्य है। क्योंकि हम सब बाइबल को ठीक से नहीं पढ़ते, ठीक से नहीं समझते।

अनेक लोग तो बाइबल को स्वयं पढ़ते तक भी नहीं। वे केवल प्रचारकों और 'पादरियों" को सुनते हैं, और जो कुछ भी वे बाइबल के नाम में कहते हैं उसे वे परमेश्वर का वचन मानकर ग्रहण कर लेते हैं। यही कारण है कि आज इतना अधिक अंधविश्वास है। क्योंकि मनुष्यों की बातों को परमेश्वर का वचन समझकर माना जा रहा है। फिर कुछ लोग बाइबल को उठाकर कभी-कभार, इधर-उधर से पढ़ लेते हैं—केवल अपने आपको संतोष दिलाने के लिए। इसके अतिरिक्त, कुछ अन्य लोग बाइबल को पढ़ते हैं अपनी किसी अनुचित धारणा या अपने किसी गलत काम को उचित वा सही ठहराने के दृष्टिकोण से। जैसे कि कुछ लोग, जो शराब पीते हैं, अपने काम को सही ठहराने के लिए अक्सर प्रभु यीशु का उदाहरण देकर कहते हैं, कि उसने एक विवाह के उत्सव में पानी को शराब बनाया था। परन्तु कहाँ लिखा है, कि उसने पानी को शराब बनाया था ? बाइबल कहती है कि जब उस उत्सव में दाखरस, अर्थात् अंगूर का रस समाप्त हो गया था तो प्रभु ने पानी को अंगूर के रस में बदल दिया था। आज जैसे कि हम लोग उत्सवों में चाय इत्यादि देते हैं, वैसे ही पलस्तीन में अंगूर बहुतायत से होने के कारण अंगूर का रस दिया जाता था। परन्तु, याद रखें, कि बाइबल में शराब की तुलना एक ज़हरीले सांप से की गई है (नीतिवचन २३ : ३१-३२), और बाइबल स्पष्टता से बताती है, कि जो लोग पियक्कड़ हैं उनमें से कोई भी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश न करेगा। (१ कुरिन्थियों ६ : १०; गलतियों ५ : २१)।

ऐसे ही, अभी कुछ ही दिन हुए जब कि एक नए फ़ैशन का आरम्भ हुआ, अर्थात् पुरुष लम्बे-लम्बे बाल रखने लगे, और उनमें से

कुछ अपने लम्बे बालों के पक्ष में उदाहरण देकर कहने लगे कि यीशु मसीह भी लम्बे बाल रखता था। परन्तु किस स्थान पर बाइबल में लिखा है कि यीशु लम्बे बाल रखता था ? वास्तव में, बाइबल कहती है, १ कुरिन्थियों ११:१४ में, कि पुरुषों के लिए लम्बे बाल रखना अपमान की बात है। इसी प्रकार, बाइबल को केवल अपने किसी अनुचित काम को सही ठहराने के विचार से पढ़ने का एक और उदाहरण हमें उन लोगों में मिलता है जिनका विचार है कि उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेने की कोई आवश्यकता नहीं है। मरकुस १६ : १६ में प्रभु यीशु ने कहा, कि, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" परन्तु जो लोग यह विश्वास करते हैं कि उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक नहीं हैं, वे कहते हैं, कि यद्यपि कि यीशु ने कहा, कि जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा; परन्तु क्योंकि प्रभु ने आगे कहा कि जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा, इसलिए उद्धार पाने के लिए केवल उसमें विश्वास लाना ही पर्याप्त है। क्योंकि यीशु ने यों नहीं कहा, वे कहते हैं, कि जो विश्वास न करेगा और बपतिस्मा न लेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। सो हम देखते हैं कि अपने अनुचित विचारों तथा धारणाओं को उचित प्रमाणित करने के लिए लोग किस प्रकार परमेश्वर के वचन को तोड़ते और मरोड़ते हैं।

परन्तु, अब, आईए, देखें कि बाइबल को पढ़ने और समझने में किन विशेष नियमों को हमें ध्यान में रखना चाहिए।

कौन बोल रहा है ?

सबसे पहिली बात इस सम्बन्ध में हमें यह ध्यान में रखनी चाहिए, कि जिस बात को हम बाइबल में पढ़ रहे हैं उसे कौन बोल या कह

रहा है। यह सच है कि बाइबल परमेश्वर का वचन है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रत्येक शब्द जो बाइबल में लिखा है वह परमेश्वर के मुख से निकला है। बाइबल में हमें सब बातों का सच्चा वर्णन मिलता है, क्योंकि इस पुस्तक को स्वयं परमेश्वर ने लिखवाया है। परन्तु इसमें लिखा प्रत्येक शब्द परमेश्वर के द्वारा नहीं कहा गया है। जैसे कि एक जगह हम पढ़ते हैं, कि शैतान ने स्त्री के पास आकर उससे कहा कि यदि तुम परमेश्वर की आज्ञा तोड़ोगे तो "तुम निश्चय न मरोगे।" (उत्पत्ति ३ : ४)। अब ये शब्द बाइबल में लिखे हुए हैं, किन्तु इन्हें परमेश्वर ने नहीं कहा, न उसके किसी भविष्यद्वक्ता ने कहा, परन्तु इन्हें शैतान ने कहा। ऐसे ही बाइबल में कहीं-कहीं हम उन लोगों के शब्दों को भी पढ़ते हैं जो परमेश्वर और उसके पुत्र मसीह के विरोधी थे। सो बाइबल को पढ़ते हुए हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जिस बात को हम पढ़ रहे हैं, उसे किसने कहा है।

किस से कहा जा रहा है ?

दूसरी आवश्यक बात हमें यह ध्यान में रखनी चाहिए कि अमुक बात किस से कही जा रही है। बाइबल में हम ऐसे तीन कालों के विषय में पढ़ते हैं जिनमें परमेश्वर ने अपनी इच्छा को मनुष्यों पर अलग-अलग ढंग से प्रगट किया है। जैसे कि हम देखते हैं कि हमारी बाइबल में दो अलग-अलग नियम हैं, अर्थात् पुराना नियम और नया नियम। नए नियम को परमेश्वर ने अपने पुत्र मसीह यीशु के द्वारा उसकी मृत्यु तथा पुनरुत्थान के बाद आज हमें दिया है। (इब्रानियों १:१,२ तथा ९:१६, १७)। ताकि आज हम उसमें लिखी बातों के अनुसार परमेश्वर की इच्छा पर चलें। परन्तु जो लोग मसीह से पूर्व रहते थे उनके लिए परमेश्वर ने अपनी इच्छा को मूसा

के द्वारा बाइबल के पुराने नियम में प्रगट किया था। सो जैसे कि वे लोग जो मसीह की मृत्यु के पहिले रहते थे परमेश्वर के उस नए नियम के आधीन नहीं थे जिसे उसने मसीह की मृत्यु के पश्चात् दिया। वैसे ही आज हम परमेश्वर के उस पुराने नियम के आधीन नहीं है जिसे परमेश्वर ने मसीह की मृत्यु के पूर्व लोगों को दिया था। परन्तु अब प्रश्न यह उठता है, कि यदि आज परमेश्वर नए नियम के द्वारा हम से बोलता है, और मसीह की मृत्यु से पहिले उसने अपनी इच्छा को लोगों पर बाइबल के पुराने नियम में प्रगट किया था। तो इन दोनों नियमों के दिए जाने से पहिले परमेश्वर लोगों पर अपनी इच्छा किस प्रकार प्रगट किया करता था ? बाइबल हमें बताती है, कि इस पुस्तक के लिखे जाने के पूर्व परमेश्वर लोगों से बाप-दादों या पूर्वजों के द्वारा बातें करता था। जैसे कि जल-प्रलय के समय परमेश्वर ने नूह पर प्रगट होकर उसे बताया था। सो इन बातों को ध्यान में रखकर, यह बड़ा ही आवश्यक है कि बाइबल को पढ़ते समय हम इस बात को ध्यान में रखें कि जो हम पढ़ रहे हैं उसकी आज्ञा परमेश्वर ने लोगों को किस काल में दी थी, अर्थात् अमुक बात किस से कही जा रही है; उनसे जो पुराने नियम के दिये जाने के पूर्व रहते थे, या उनसे जो पुराने नियम के काल में रहते थे, या उन लोगों से जो आज नए नियम के काल में रहते हैं ? जैसे कि हम एक जगह पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु ने कहा, कि जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा। (मरकुस १६:१६)। अब यह आज्ञा यीशु ने कब दी ? हम देखते हैं, कि यह आज्ञा यीशु ने अपनी मृत्यु और जी उठने के बाद दी। सो इसका अर्थ यह हुआ, कि जो लोग मसीह की मृत्यु के पहिले रहते थे उन्हें उद्धार पाने के लिये बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं थी। परन्तु अब, जो लोग मसीह की मृत्यु के बाद रहते हैं उन सब पर मसीह की यह आज्ञा

लागू होती है, कि जो उसमें विश्वास करेगा और बप्तिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। सो यह बड़ा ही आवश्यक है, कि हम इस बात का ध्यान रखें कि जिस बात को हम बाइबल में पढ़ रहे हैं, वह बात कब और किस से कही गई।

विषय क्या है ?

तीसरी बात, बाइबल को पढ़ते समय, हमें जो ध्यान में रखनी चाहिए, वह यह है कि जिस बात के बारे में हम पढ़ रहे हैं, उसका विषय क्या है ? क्या लेखक यह बता रहा है कि मसीह आ चुका है या वह उसके दोबारा प्रगट होने के बारे में कह रहा है ? क्या वह पुराने नियम की आज्ञाओं का वर्णन कर रहा है, या नए नियम में लिखी आज्ञाओं के बारे में कह रहा है ? सो विषय को ध्यान में रखना बड़ा ही आवश्यक है। और इसी के साथ-साथ यह भी ध्यान में रखना ज़रूरी है, कि जिस बात को हम पढ़ रहे हैं उसे किस संदर्भ में कहा जा रहा है। अक्सर कुछ लोग अपनी किसी बात पर बल देने के लिये बाइबल की किसी एक आयत को चुन लेते हैं, और उस आयत के आगे और पीछे क्या लिखा है इसकी वे कोई परवाह नहीं करते। इसका एक उदाहरण हमें बाइबल में प्रेरितों के काम की पुस्तक के सोलहवें अध्याय में से मिलता है। यहां ३१वीं आयत में हम पढ़ते हैं, कि पौलुस और सीलस ने एक मनुष्य को कहा, कि तू प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। अब कुछ लोग इस आयत के आधार पर यह धारणा बना लेते हैं, कि यदि आज कोई मनुष्य यीशु मसीह पर केवल विश्वास लाएगा तो वह और उसका घराना उद्धार पाएगा। परन्तु इस अनुचित धारणा का कारण यह है कि लोग इस आयत से ऊपर और नीचे लिखी आयतों को नहीं पढ़ते। परन्तु यदि हम इस सम्बन्ध में पूरी

बात को पढ़ेंगे, तो न केवल हम यह देखेंगे कि उन्होंने उसे विश्वास लाने को क्यों कहा, किन्तु हम यह भी देखेंगे कि उद्धार पाने के लिये सबसे पहिले उन लोगों ने प्रभु का वचन सुना, फिर उन्होंने विश्वास किया, और पश्चाताप करके उन्होंने तुरन्त बपतिस्मा लिया।

सो मेरा विश्वास है, कि न केवल आप बाइबल को परमेश्वर का वचन मानकर उसे प्रति-दिन केवल पढ़ेंगे ही, परन्तु बाइबल को पढ़ते समय आप यह भी ध्यान में रखेंगे, कि कौन बोल रहा है, और किससे कहा जा रहा है; और वह बात किस विषय तथा किस संदर्भ में कही जा रही है।

प्रभु अपने वचन को समझने में आपकी अगुवाई करें।

बाइबल के पुराने नियम का हम क्या करें ?

आपने कदाचित् मूसा का नाम तो अवश्य सुना होगा। मूसा के द्वारा परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र देश के दास्त्व से मुक्ति दिलवाई थी। इस्राएली जो कि यहूदी थे उस इब्राहीम के वंश से थे, जिस से परमेश्वर ने सैकड़ों वर्ष पूर्व प्रतिज्ञा करके कहा था, कि मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और पृथ्वी के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे। (उत्पत्ती १२)। और बाइबल हमें बताती है, कि आज से दो हजार वर्ष पूर्व जब यीशु मसीह का जन्म पलस्तीन देश में हुआ और जब उसने जगत के उद्धार के लिये क्रूस पर अपने आप को बलिदान किया तो परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा को इस प्रकार पूरा किया। (गलतियों ३)। इसीलिये बाइबल में हमें दो वाचाओं अर्थात् दो नियमों के विषय में मिलता है, अर्थात् एक पुराना नियम और दूसरा नया नियम। पुराना नियम वह है जिसे परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएलियों अर्थात् यहूदियों को दिया था। और नया नियम परमेश्वर की दूसरी वाचा है, जिसे उसने अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा, पहिली वाचा के पूरा हो जाने पर, सब लोगों को दिया है। वास्तव में, आज बहुतेरे लोग बाइबल को समझने और उस पर अमल करने में इसीलिये असफल रह जाते हैं क्योंकि वे इन दोनों वाचाओं में इस विशेष अन्तर को नहीं देख पाते कि पुराना नियम परमेश्वर की वह वाचा थी जिसे उसने यहूदियों के साथ बांधा था। और नया नियम परमेश्वर की नई वाचा है, जिसे उसने जगत के सारे लोगों के साथ बांधा है, जिनमें यहूदी भी शामिल हैं।

बाइबल के पुराने तथा नए नियम के बीच इस बड़े ही महत्वपूर्ण अन्तर को न समझने के कारण ही आज हम देखते हैं, कि बहुतेरे लोग जबकि एक ओर तो नए नियम की शिक्षाओं को मान रहे हैं, दूसरी ओर वे उन बातों का भी पालन कर रहे हैं जिनके बारे में पुराने नियम में लिखा हुआ है। जैसे कि आज हम देखते हैं, कि कुछ लोग इस बात पर ज़ोर देते हैं कि आज लोगों को दशमांस देना चाहिए। दशमांस, अर्थात् अपनी आमदनी का दसवां हिस्सा देने की आज्ञा परमेश्वर ने यहूदियों को दी थी। (व्यवस्थाविवरण १४:२२)। यह आज्ञा उन्हें मूसा के द्वारा पुराने नियम में मिली थी। आज परमेश्वर के नए नियम में हमारे ऊपर इस आज्ञा को नहीं बांधा गया है, कि हम अपनी आमदनी का दसवां हिस्सा दें। परन्तु परमेश्वर का नया नियम आज हमें यह आज्ञा देता है, कि जब हम सप्ताह के पहिले दिन, अर्थात् इतवार के रोज़ इकट्ठा होते हैं, तो हम में से हर एक अपनी-अपनी आमदनी के अनुसार चन्दा दिया करे। (१ कुरिन्थियों १६ : १, २)। नए नियम में यह भी कहा गया है, "कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा। हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुढ़-कुढ़ के, और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है।" (२ कुरिन्थियों ९ : ६, ७)। सो हम देखते हैं, कि परमेश्वर का नया नियम आज हमें आज्ञा देकर कहता है, कि हर एक जन जैसा मन में ठाने, अपनी-अपनी आमदनी के अनुसार, चन्दा दिया करे। अर्थात् यह अधिकार आज किसी को नहीं दिया गया है, कि लोगों पर नियम लागू करके कहें कि उन्हें दस प्रतिशत या बीस प्रतिशत चन्दा देना है। परन्तु यह निश्चय प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं करना है, कि उसे कितना देना है। मान लीजिए, यदि आप एक किसान हैं और आप बीज बोते हैं, तो आपकी इच्छा यही रहेगी कि आप को अधिक फसल प्राप्त हो। परन्तु वास्तव में आप उतनी ही

फसल प्राप्त करेंगे जितना आपने बीज बोया है। यही सिद्धान्त आज हमारे चन्दे या दान पर भी लागू होता है, अर्थात् यदि हम अधिक देंगे तो अधिक पाएंगे भी। परन्तु नए नियम में आज हमें यह आज्ञा नहीं मिलती कि हम दशमांस दे। यह आज्ञा उन लोगों को दी गई थी जो पुराने नियम में रहते थे। आज वास्तव में बहुतेरे ऐसे लोग हैं जो कुढ़-कुढ़ के दबाव के कारण अपना दशमांस देते हैं, क्योंकि उनके 'चर्च' की ओर से उन्हें कड़ा आदेश दिया जाता है। परन्तु परमेश्वर आज हमसे ऐसा नहीं कहता।

इसी प्रकार, नया नियम आज हमें सिखाता है, कि हमें सप्ताह के पहिले दिन अर्थात् इतवार के दिन एकत्रित होकर परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए, और यह भी लिखा है, कि हमें आज किस तरह से उपासना करनी चाहिए। परन्तु जबकि लोग उपासना तो करते हैं किन्तु उस पर भी पुराने नियम में लिखी बातों का रंग चढ़ा होता है। जैसे कि बहुतेरे इतवार के दिन को सब्त का दिन मानते हैं। पुराने नियम में हम सब्त के दिन के बारे में पढ़ते हैं। यह दिन परमेश्वर ने यहूदियों को यह कहकर दिया था, कि यह दिन उनके लिये विश्राम का दिन है, और सब्त सप्ताह का आखिरी दिन था, अर्थात् शनीवार का दिन। (निर्गमन २० : ८—११)। परन्तु इतवार, अर्थात् सप्ताह का पहिला दिन सब्त का दिन नहीं है, यह प्रभु का दिन है; क्योंकि इस दिन हमारा प्रभु मुर्दों में से जी उठा था। (मरकुस १६ : १, २; प्रकाशितवाक्य १ : १०)। ऐसे ही पुराने नियम में हम पढ़ते हैं, कि जब यहूदी लोग अपने मन्दिर में उपासना करते थे तो वे मोमबत्ति तथा लोबान इत्यादि जलाते थे, और मन्दिर में बनी वेदी के सम्मुख आरती देते थे (निर्गमन २५ : ३१; लैव्यव्यवस्था १० : १)। सो अनेक लोग आज ऐसा भी कर रहे हैं, अर्थात् एक ओर तो वे कहते हैं कि हम मसीही हैं, परन्तु दूसरी ओर उपासना यहूदियों की तरह

करते हैं। अनेक स्थानों पर उपासना में इतवार के दिन मोमबत्तियां जलाई जाती हैं, लोबान जलाई जाती है, और कहीं-कहीं तो बाकायदा आरती भी उतारी जाती है। परन्तु नया नियम इन बातों के बारे में हमें कुछ नहीं सिखाता।

फिर, उपासना में ही आज यहूदियों की एक और रस्म का पालन किया जाता है, अर्थात् याजक कुछ बोले और उसके जवाब में मंडली कुछ और कहे। पुराने नियम के काल में यहूदी इसी प्रकार अपनी उपासना करते थे, और यही आदर्श आज अनेक "गिरजा-घरों" में पालन किया जाता है। किन्तु नया नियम हमसे कहता है, कि हम आज परमेश्वर की उपासना रूह और सच्चाई से करें। (यूहन्ना ४ : २४)। इसी प्रकार, जैसे यहूदी अपनी उपासना में मूसा की दस आज्ञाओं को बार-बार पढ़ते थे, ठीक ऐसा ही आज भी किया जाता है। क्या यह सच नहीं है ? रटी हुई प्रार्थनाएँ पढ़ी जाती हैं; अकीदे पढ़े जाते हैं। आत्मा और सच्चाई से उपासना करने के विपरीत मनुष्यों की लिखी हुई किताबों के द्वारा परमेश्वर की उपासना की जाती है। क्या आप सोचते हैं, कि आज नए नियम के इस काल में परमेश्वर इस प्रकार की उपासना को ग्रहण करता है ? प्रभु यीशु ने एक जगह यों कहा था, "सो तुमने अपनी रीतों के कारण परमेश्वर का वचन टाल दिया। हे कपटियो, यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वाणी ठीक की। कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर रहता है। और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।" (मत्ती १५:६—९)।

कदाचित् आपने कभी यह भी अवश्य ही सोचा होगा, कि विशेषकर इतवार के दिन "पादरी" इत्यादि लोग उपासना सभा की अगुवाई करते समय विशेष प्रकार के चोगे क्यों पहिनते हैं ? पुराने

नियम के काल में जो लोग यहूदियों की अगुवाई करते थे, वे शास्त्री और फ़रीसी कहलाते थे। ये लोग अपने आपको साधारण लोगों से अलग रखना चाहते थे। सो इस दृष्टिकोण से, कि वे अन्य लोगों से अधिक धार्मिक प्रतीत हों, और लोग उन्हें पवित्र जानकर अधिक आदर-सम्मान दें, ये लोग विशेष प्रकार के चोगे पहिनते थे और ख़ासकर सफ़ेद चोगे। इसी के साथ, ये लोग आम लोगों की तरह अपने नाम से न कहलाए जाकर अपने आप को किसी विशेष नाम के द्वारा कहलाया जाना अधिक पसन्द करते थे, जैसे कि "रब्बी"। नए नियम में एक जगह प्रभु यीशु ने फ़रीसियों तथा शास्त्रियों को सम्बोधित करके यों कहा था, "वे अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिये करते हैं : वे अपने तावीज़ों को चौड़े करते, और अपने वस्त्रों की कोरें बढ़ाते हैं। जेवनारों में मुख्य-मुख्य जगहें, और सभा में मुख्य-मुख्य आसन, और बाज़ारों में नमस्कार और मनुष्यों में रब्बी कहलाना उन्हें भाता है।" किन्तु, फिर अपने चेलों की ओर फिरकर प्रभु ने उनसे कहा, "परन्तु तुम रब्बी न कहलाना; क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु है : और तुम सब भाई हो। और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है।" (मत्ती २३:५-९)। परन्तु, आज हम क्या देखते हैं ? हम देखते हैं, कि न केवल पुराने नियम के यहूदियों के अगुवों के चोगों को ही पहिना जाता है, परन्तु साथ ही वे लोग यह भी चाहते हैं कि लोग उन्हें उनके व्यक्तिगत नामों से न बुलाकर उन्हें किसी विशेष नाम से सम्बोधित करें। सो, आज वे "पादरी", "रेवरेन्ड" और "फ़ादर", इत्यादि कहलाते हैं।

मित्रो, मैं ये बातें इसलिये नहीं कह रहा हूं कि मेरे मन में किसी के प्रति कोई कटुता या बैर है। परन्तु ये सब मैं इसलिये कह रहा हूं ताकि आप सच्चाई को जानें और उन बातों से अपना मन फिराएं

जो आज परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं हैं । ताकि आप यह जानें कि हमें आज बाइबल के उस पुराने नियम के अनुसार नहीं चलना है जिसे परमेश्वर ने मूसा द्वारा यहूदियों को दिया था । परन्तु हमें आज परमेश्वर के उस नए नियम के अनुसार चलना है जिसे उसने हमें अपने पुत्र मसीह के द्वारा दिया है ।

परन्तु, इसका अर्थ यह नहीं है, कि हम बाइबल के पुराने नियम को महत्वरहित समझें, और उसे न पढ़ें । वास्तव में बाइबल की दोनों ही वाचाएं परमेश्वर का वचन है । अन्तर केवल इतना है, कि एक पुरानी है और एक नई है । पुरानी वाचा लोगों पर उस समय तक लागू रही जब तक कि मसीह हम सबके पापों के लिये क्रूस पर न मरा । परन्तु मसीह की मृत्यु के बाद उसकी नई वाचा जगत पर लागू हुई । सो आज परमेश्वर की इच्छा पर चलने के लिये हमें बाइबल के पुराने नियम के अनुसार नहीं चलना है, परन्तु नए नियम के अनुसार चलना है । तौभी हमें पुराने नियम को पढ़ने की आवश्यकता है । क्योंकि उसमें संसार की सृष्टि का वर्णन है; मनुष्य के पाप में गिरने का वर्णन है, और मसीह से पूर्व के इतिहास का वर्णन है । पुराने नियम में हमें उन भविष्यद्वाणियों के बारे में मिलता है जो संसार के उद्धारकर्त्ता मसीह के पृथ्वी पर आने के सम्बन्ध में की गई थीं । बाइबल के पुराने नियम में हमें विश्वास के सिद्धांत मिलते हैं; आज्ञापालन के सिद्धांत मिलते हैं, और सबसे बड़ी बात यह है कि जिस प्रकार नया नियम पुराने नियम को पूरा करता है, वैसे ही पुराना नियम नए नियम को स्पष्ट करता है । परन्तु विशेष महत्व की बात यह है, कि हम बाइबल के पुराने तथा नए नियम के स्थान और उन दोनों के बीच अंतर को पहचानें । (इब्रानियों ८:१३) । अर्थात्, पुराने नियम में लिखी आज्ञाओं में से कोई भी आज्ञा आज हमारे ऊपर लागू नहीं होती । क्योंकि परमेश्वर ने पुराने नियम को

समाप्त करके उसके स्थान पर आज हमें अपना नया नियम दिया है। वे लोग जो पुराने नियम के काल में रहते थे, उनसे कहा गया था, कि वे अपने पापों की छुड़ौती के लिये बलिदान चढ़ाएं। परन्तु नया नियम आज हमें आज्ञा देकर कहता है कि जो मनुष्य यीशु मसीह में विश्वास करेगा और अपना मन फिराएगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस १६: १६; प्रेरितों २:३८)। हमें आज पशुओं के बलिदान चढ़ाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि परमेश्वर का पुत्र मसीह हमारे पापों के लिये बलिदान हुआ है। वह हमारे पापों का प्रायश्चित है।

मित्रो, बाइबल परमेश्वर का वचन है। परन्तु आवश्यक है कि हम उसके वचन पर उस की इच्छानुसार चलें। (२ तीमुथियुस २:१५)।

क्या हमें दस आज्ञाओं को मानना चाहिए ?

मित्रो :

बाइबल अध्ययन के इस समय के लिए हम परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं। आप में से जो लोग बाइबल से परिचित हैं, वे दस आज्ञाओं से भी परिचित हैं। वैसे बहुत से ऐसे लोग भी हैं जो बाइबल से परिचित नहीं हैं किन्तु तौभी वे बाइबल की इन दस आज्ञाओं से परिचित हैं, क्योंकि या तो उनके बारे में उन्होंने कहीं पढ़ा है, या फिर उनके बारे में कोई चित्र इत्यादि देखे हैं। मेरे कहने का अभिप्राय यह है, कि बाइबल में पाई जानेवाली इन दस आज्ञाओं से बहुत से लोग परिचित हैं। परन्तु वास्तव में बहुत ही कम ऐसे लोग हैं जो इन दस आज्ञाओं को ठीक से समझते हैं। अर्थात्, बहुत ही थोड़े लोग यह जानते हैं कि ये दस आज्ञाएं परमेश्वर ने मूसा के द्वारा केवल यहूदियों को दी थीं। बाइबल में व्यवस्थाविवरण नाम की पुस्तक के पाँचवे अध्याय में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि, "मूसा ने सारे इस्राएलियों को बुलवाकर कहा, हे इस्राएलियो, जो-जो विधि और नियम मैं आज तुम्हें सुनाता हूं वे सुनो, इसलिए कि उन्हें सीखकर मानने में चौकसी करो। हमारे परमेश्वर यहोवा ने तो होरेब पर हमसे वाचा बान्धी। इस वाचा को यहोवा ने हमारे पित्रों से नहीं, हम ही से बान्धा, जो यहाँ आज के दिन जीवित हैं।" (व्यवस्थाविवरण ५ : १-३)। सो परमेश्वर ने दस आज्ञाओं की इस वाचा को इस्राएलियों से, अर्थात् यहूदियों से बान्धा था।

इसी प्रकार, बहुत ही थोड़े लोग आज इस बात को समझते हैं, कि यह प्रथम वाचा जिसे परमेश्वर ने इस्राएलियों या यहूदियों के साथ बान्धा था स्थाई या मुस्तकिल नहीं थी, परन्तु यह वाचा कुछ समय तक के लिए ही दी गई थी और भविष्य में इसके स्थान पर एक नई वाचा दी जानेवाली थी जिसके आने पर इस प्रथम वाचा को समाप्त हो जाना था। भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह के द्वारा परमेश्वर ने उन दिनों में यों कहा था, कि ऐसे दिन आनेवाले हैं जबकि मैं अपने लोगों के साथ एक नई वाचा बाँधूंगा जो कि इस वाचा के समान न होगी। (यिर्मयाह ३१ : ३१, ३२)।

ऐसे ही, बहुत ही थोड़े लोग आज इस बात का ज्ञान रखते हैं कि परमेश्वर की नई वाचा के जगत में आने के बाद उसकी वह प्रथम वाचा जिसमें दस आज्ञाएं सम्मिलित थीं हमेशा के लिए समाप्त हो चुकी है। बाइबल में २ कुरिन्थियों की पुस्तक के तीसरे अध्याय में यूं लिखा है : "और यदि मृत्यु की वह वाचा जिसके अक्षर पत्थरों पर खोदे गए थे, यहां तक तेजोमय हुई, कि मूसा के मुंह पर के तेज के कारण जो घटता भी जाता था, इस्राएली उसके मुंह पर दृष्टि नहीं कर सकते थे। तो आत्मा की वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी ? क्योंकि जब दोषी ठहरानेवाली वाचा तेजोमय थी, तो धर्मी ठहरानेवाली वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी ? क्योंकि जब वह जो घटता जाता था तेजोमय था, तो वह जो स्थिर रहेगा, और भी तेजोमय क्यों न होगा ?" (२ कुरिन्थियों ३ : ७-११)। और फिर इसी प्रकार कुलुस्सियों की पुस्तक के दूसरे अध्याय में, बाइबल का लेखक कहता है, कि प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु के द्वारा "विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला; और उसको क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है।" (कुलुस्सियों २ : १४)। सो बाइबल हमें स्पष्टता से बताती है, कि

परमेश्वर की प्रथम वाचा, जिसमें दस आज्ञाएं भी शामिल थीं, और जिसे परमेश्वर ने अपने दास मूसा के द्वारा यहूदियों को दिया था, मसीह की नई वाचा अर्थात् नया नियम आने पर समाप्त हो चुकी है। प्रभु यीशु ने एक जगह कहा था : "यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं। लोप करने नहीं परन्तु पूरा करने आया हूं; क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।" (मत्ती ५ : १७, १८)। सो प्रभु यीशु मसीह के कथनानुसार, वह व्यवस्था को पूरा करने आया था। व्यवस्था, अर्थात पुराने नियम में विशेष रूप से हमें दो बातों के बारे में मिलता है : अर्थात् यह कि मनुष्य पापी है, और परमेश्वर की ओर से पृथ्वी पर जगत का वह उद्धारकर्त्ता आ रहा है जो सारे जगत के लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा। सो जब प्रभु यीशु मसीह ने पृथ्वी पर आकर जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिए अपने आपको बलिदान किया, तो इस प्रकार उसने व्यवस्था में लिखी बातों को पूरा किया, और पूरा करने के बाद उसने उस व्यवस्था को हटाकर उसके स्थान पर हमें अपनी नई वाचा अर्थात् अपना नया नियम दिया। इसीलिए बाइबल का लेखक कहता है, कि विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था मसीह ने उसे मिटा डाला; और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर उसे सामने से हटा दिया। और फिर इसी प्रकार इफिसियों की पुस्तक के दूसरे अध्याय में बाइबल का लेखक यों कहता है : "क्योंकि वही (अर्थात मसीह) हमारा मेल है, जिसने दोनों को एक कर लिया : और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी ढा दिया। और अपने शरीर में बैर अर्थात् व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया....." (इफिसियों २ : १४, १५)।

सो इस से पहिले, कि हम व्यवस्था में लिखी दस आज्ञाओं के

सम्बन्ध में विचार करें, यह समझ लेना बड़ा ही आवश्यक है : कि व्यवस्था या पुराने नियम अर्थात बाइबल के पहिले भाग में आज हम जिन आज्ञाओं को पढ़ते हैं, ये सब इस्राएलियों अर्थात यहूदियों को दी गई थीं। यह व्यवस्था कुछ समय तक के लिए अर्थात् मसीह के जगत में आने के समय तक के लिए दी गई थी। और जब मसीह ने क्रूस पर चढ़कर व्यवस्था को पूरा कर दिया तो उसने उसे हटा दिया और उसके स्थान पर उसने हमें परमेश्वर की नई वाचा अर्थात् अपना नया नियम दिया। (गलतियों ३ : १९, १६; २३—२९)। सो इसलिए, आज हम व्यवस्था में लिखी किसी भी आज्ञा के आधीन नहीं हैं। (गलतियों ५ : ४)। यद्यपि कि व्यवस्था में लिखी बातों से आज हम अनेक बड़ी ही अच्छी तथा प्रभावपूर्ण शिक्षाएं सीखते हैं। (रोमियों १५ : ४)। जैसे कि एक स्थान पर व्यवस्था में हम यूं पढ़ते हैं, कि परमेश्वर बलिदानों से नहीं, परन्तु अपनी आज्ञा के माने जाने से प्रसन्न होता है। (१ शमूएल १५ : २२)। सो इस से आज हम सीखते हैं, कि चाहे हम परमेश्वर को कुछ भी क्यों न दे दें, परन्तु यदि हम उसकी आज्ञाओं को नहीं मानते—अर्थात् जो आज्ञाएं आज उसने हमें अपनी नई वाचा में दी हैं—तो हम उसे कदापि प्रसन्न नहीं कर सकते। सो आज हमें यह बात सीखने की बहुत बड़ी आवश्यकता है, कि यद्यपि कि आज हम उन बातों से शिक्षाएं सीखते हैं जिन्हें हम व्यवस्था अर्थात् पुराने नियम में पढ़ते हैं, किन्तु आज हम व्यवस्था में लिखी किसी भी आज्ञा के आधीन नहीं हैं। हम व्यवस्था में लिखी दस आज्ञाओं के आधीन नहीं हैं। परन्तु सच्चाई यह है, कि इन आज्ञाओं में कुछ ऐसी बातों का वर्णन हुआ है जिन्हें हम आज भी मानते हैं, और हमें मानना चाहिए, इसलिए नहीं कि वे बातें व्यवस्था की दस आज्ञाओं का भाग हैं, परन्तु इसलिए क्योंकि इन बातों के बारे में आज हम प्रभु यीशु के नए नियम में पढ़ते हैं। वास्तव में, इन दस आज्ञाओं में से नौ का उल्लेख प्रभु यीशु के नए नियम में हमें मिलता है।

और नए नियम में इन्हें हमें और भी अधिक स्पष्टता से दिया गया है। परन्तु इससे पहिले, कि हम अपने अध्ययन में आगे बढ़ें, आप में से शायद कुछ लोग यह जानना चाहें, कि यदि आज हमें व्यवस्था की दस आज्ञाओं को नहीं मानना है, तो फिर प्रभु यीशु मसीह ने उस मनुष्य से बातें करते हुए, जो उसके पास अनन्त जीवन का मार्ग जानने के लिए आया था, उससे यों क्यों कहा, कि तू दस आज्ञाओं को तो जानता है ? वास्तव में, बात यह है, कि वह मनुष्य उस समय परमेश्वर की उस पहिली वाचा के आधीन था जिसमें दस आज्ञाओं का वर्णन है। क्योंकि उसकी नई वाचा उस समय तक प्रभावकारी नहीं हुई जब तक कि मसीह क्रूस के ऊपर नहीं मरा। पवित्र बाइबल का लेखक एक जगह यों कहता है : "क्योंकि जहाँ वाचा बान्धी गई है वहाँ वाचा बाँधनेवाले की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है। क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बान्धनेवाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती।" (इब्रानियों ९ : १६, १७)। सो इससे हम सीखते हैं कि परमेश्वर की नई वाचा अर्थात प्रभु यीशु मसीह का नया नियम उस समय प्रभावकारी हुआ जब क्रूस के ऊपर उसकी मृत्यु हुई। और जब उसकी नई वाचा लागू हो गई, तो वह पुरानी वाचा जिस में दस आज्ञाएं थीं समाप्त हो गई। (इब्रानियों ८ : १३)।

सो अब, जबकि हम समझ चुके हैं, कि आज हम परमेश्वर की पुरानी वाचा की दस आज्ञाओं के या किसी भी आज्ञा के आधीन नहीं हैं। किन्तु फिर भी आज हमें उन आज्ञाओं के सारांश को मानना है, इसलिए नहीं कि, वे पुराने नियम की दस आज्ञाओं का भाग हैं, परन्तु इसलिए क्योंकि उनके बारे में हमें प्रभु यीशु के नए नियम में मिलता है। सो अब हम पुराने नियम की इन दस आज्ञाओं को एक-एक करके नए नियम के प्रकाश में देखेंगे। परन्तु यह हम अपने अगले अध्ययन में ही देख सकेंगे, क्योंकि अब हमारे कार्यक्रम का समय समाप्त हो रहा है।

परमेश्वर आप सबको अपने वचन को समझने की ताकत दे।

दस आज्ञाएं

नए नियम के प्रकाश में

(१)

मित्रो :

एक बार फिर से मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं इस अवसर के लिये जबकि हम उसके पवित्र वचन का अध्ययन करेंगे । जैसा कि आप जानते हैं कि अपने पिछले पाठ में हमने दस आज्ञाओं के सम्बन्ध में यह देखा था, कि आज हम पुरानी वाचा की दस आज्ञाओं के आधीन नहीं हैं । क्योंकि पुरानी वाचा के स्थान पर आज हमें परमेश्वर ने अपनी नई वाचा दी है । परन्तु दस आज्ञाओं में से नौ के सारांश को हमें आज भी मानना है, इसलिये नहीं, क्योंकि उनके बारे में हमें पुराने नियम की दस आज्ञाओं में मिलता है, परन्तु इसलिये, क्योंकि उनके बारे में हम आज प्रभु यीशु के नए नियम में पढ़ते हैं । सो आज हम अपने पाठ में पुराने नियम की दस आज्ञाओं को नए नियम के प्रकाश में देखेंगे ।

वास्तव में, दस आज्ञाओं को हम दो भागों में बांट सकते हैं । अर्थात् पहिली चार आज्ञाएं हमें बताती हैं, कि मनुष्य का परमेश्वर के साथ कैसा सम्बन्ध होना चाहिए । और अगली छः आज्ञाएं इस बात को प्रगट करती हैं, कि मनुष्य का सम्बन्ध या व्यवहार अन्य मनुष्यों के साथ कैसा होना चाहिए । एक बार एक व्यवस्थापक जब प्रभु यीशु के पास यह प्रश्न लेकर आया, कि व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है ? तो प्रभु

ने उसके प्रश्न के जवाब में उससे कहा, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है" यीशु ने कहा, "कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है।" (मत्ती २२:३६-४०)। सो दस आज्ञाएं वास्तव में इन्हीं दो मुख्य आज्ञाओं पर आधारित हैं, अर्थात् मनुष्य को परमेश्वर के साथ अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखना चाहिए। और अपने पड़ौसी के साथ अपने समान प्रेम रखना चाहिए। सो अब, आईए, हम दस आज्ञाओं को नए नियम के प्रकाश में देखें।

सबसे पहिली आज्ञा देकर परमेश्वर ने उन इस्राएलियों से यों कहा था : "कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है। तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।" इस आज्ञा में हम देखते हैं, कि परमेश्वर केवल एक ही है, और वह आज्ञा देकर कहता है कि मुझे छोड़ और किसी को ईश्वर करके न मानना। प्रभु यीशु के बपतिस्मा लेने के बाद, जब शैतान ने उसकी परीक्षा लेकर उस से कहा था, कि यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे तो, मैं यह सब कुछ अर्थात् जगत के राज्य और विभव तुझे दे दूंगा। तो हम पढ़ते हैं, कि तब यीशु ने उससे कहा, कि "हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।" (मत्ती ४:१०)। और फिर जब प्रभु यीशु ने परमेश्वर के राज्य का प्रचार करना आरम्भ किया, तो उसने एक जगह कहा, "इसलिये पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।" (मत्ती ६:३३)। सो क्योंकि प्रभु यीशु ने हमें यह सिखाया

कि हमें केवल परमेश्वर की ही उपासना करनी चाहिए और केवल उसी को दन्डवत करना चहिए; और अपने जीवन में सबसे पहिला स्थान केवल उसी को देना चाहिए । इसलिये यदि हम किसी अन्य प्राणी या वस्तु को दन्डवत करते हैं या उसकी उपासना करते हैं, तो हम न केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आज्ञा को ही तोड़ते हैं, परन्तु हम ऐसा करके उसका निरादर करते हैं । परमेश्वर ने यह आज्ञा इसलिये दी थी क्योंकि वह नहीं चाहता कि हम अपने जीवन में उसके सिवाय किसी भी अन्य वस्तु या प्राणी को उससे अधिक महत्वपूर्ण समझें । क्योंकि वह हमसे अपने समान प्रेम रखता है; वह मनुष्य को बचाने के लिये स्वयं अपने आप को भी दे सकता है । सो वह चाहता है कि इसी प्रकार मनुष्य भी अपने सारे मन, प्राण और बुद्धि से उसके साथ प्रेम रखे । किन्तु, कुछ लोगों का ईश्वर पैसा है, क्योंकि वे सबसे अधिक उसी को अपने जीवन में महत्व देते हैं । फिर, कुछ लोगों के लिये बुद्धि ही सब कुछ है । प्रभु यीशु के नए नियम में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं : "तुम न तो संसार से और न संसार की वस्तुओं से प्रेम रखो : यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं है । क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमन्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से हैं । और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा ।" (१ यूहन्ना २:१५-१७) । परमेश्वर के अतिरिक्त यदि कोई भी वस्तु या कोई भी प्राणी हमारे जीवन पर अधिकार रखता है, या उसका हमारे जीवन में सबसे अधिक महत्व है, तो वह हमारा ईश्वर है । परन्तु परमेश्वर कहता है, कि तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना । और प्रभु यीशु ने हमें सिखाया, कि हमें केवल परमेश्वर को दन्डवत करना चाहिए, और केवल उसी की उपासना

करनी चाहिए; और सबसे पहिले हमें उसकी धार्मिकता और उसके राज्य की खोज करनी चाहिए। अर्थात् परमेश्वर और उसकी आज्ञाओं को मानने से बढ़कर हमारे जीवन में किसी भी अन्य वस्तु का स्थान नहीं होना चाहिए।

इसी प्रकार, दस आज्ञाओं में, दूसरी आज्ञा देकर परमेश्वर ने यों कहा था, "तू अपने लिये कोई मूर्ती खोदकर न बनाना, जो आकाश में, वा पृथ्वी के जल में है। तू उनको दन्डवत मत करना, और न उनकी उपासना करना।" एक मूर्ती वह वस्तु है जो मनुष्य के मन में परमेश्वर का झूठा विचार तथा झूठा आकार उत्पन्न करती है। परमेश्वर आत्मा है। इसलिये मनुष्य यदि उसका कोई आकार या चित्र बनाता है, तो वह उस सर्वशक्तिमान की तुलना एक ऐसी वस्तु से करता है जो नाशमान, निरी काल्पनिक और मनुष्य की ही कारीगरी है। पवित्र बाइबल का लेखक नए नियम में एक जगह कहता है: "परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। इसलिये कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है। क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं। इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उनका निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला" (रोमियों १:१८-२३)। सो अपनी कल्पना से बनाए चित्रों तथा

मूर्तियों के द्वारा मनुष्य अविनाशी परमेश्वर को नाशमान वस्तुओं में बदल डालता है। परमेश्वर महान्, सर्वशिक्तमान् तथा सृष्टिकर्त्ता है। परन्तु जब हम उसे मिट्टी या सोने-चांदी इत्यादि जैसी पृथ्वी की नाशमान वस्तुओं का रूप देते हैं, तो इस प्रकार हम उसका निरादर करते हैं। इसीलिये बाइबल में नए नियम का लेखक एक अन्य जगह कहता है, कि अपने आप को मूरतों से बचाए रखो। (१ यूहन्ना ५:२१)। और फिर एक अन्य स्थान पर वह कहता है, कि कोई भी मूर्ती-पूजक परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा। (१ कुरिन्थियों ६:९)। सो हम परमेश्वर की भक्ति वा उपासना किसी भी मूरत इत्यादि के द्वारा नहीं कर सकते। इसलिये नहीं, कि क्योंकि दस आज्ञाओं में ऐसा करने को मना किया गया है, परन्तु क्योंकि प्रभु यीशु का नया नियम हमें ऐसा करने की अनुमति नहीं देता।

फिर, दस आज्ञाओं की तीसरी आज्ञा यह थी, कि, "तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना; क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा।" किन्तु फिर हम बाइबल के नए नियम में पढ़ते हैं, कि एक बार जब यीशु अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखा रहा था तो उसने उनसे कहा, कि तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो : "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।" (मत्ती ६ : ९)। हम किसी भी पवित्र वस्तु का उपयोग व्यर्थ में नहीं करना चाहते। परन्तु प्रभु यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर का नाम पवित्र माना जाए। मनुष्य कई प्रकार से परमेश्वर के नाम को व्यर्थ में ले सकता है, या व्यर्थ में उसका उपयोग करके उसके महिमान्वित महत्त्व को कम कर सकता है। जैसे कि, बहुत से लोगों को कसम या शपथ खाने की आदत होती है। वे किसी भी बात के लिये और कभी भी परमेश्वर के नाम को व्यर्थ में लेने से नहीं चूकते। कुछ लोग अपने किसी प्रकार के किसी व्यक्तिगत

लाभ के लिये परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेते हैं। परन्तु परमेश्वर का नाम पवित्र है, और जो लोग उसके नाम को व्यर्थ में लेते हैं, या उसके नाम का अनुचित इस्तेमाल करते हैं, वे अवश्य ही निर्दोष न ठहरेंगे। "क्योंकि" प्रभु यीशु ने कहा, "तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा।" (मत्ती १२ : २७)।

किन्तु, फिर, दस आज्ञाओं में चौथी आज्ञा यह थी : "तू विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना।" परन्तु जबकि दस आज्ञाओं की प्रत्येक आज्ञा के सम्बन्ध में हमें नए नियम में आदेश मिलता है, केवल यही एक ऐसी आज्ञा है जिसके सम्बन्ध में नए नियम में आज हमें कोई आदेश नहीं मिलता। यही वह आज्ञा है, जिसका उल्लेख करके इससे पूर्व मैंने कहा था कि जब कि दस आज्ञाओं की नौ आज्ञाओं के सम्बन्ध में तो हमें नए नियम में फिर से आदेश मिलता है, किन्तु एक के सम्बन्ध में हमें प्रभु यीशु के नए नियम में कोई आज्ञा नहीं मिलती। और यही कारण है, कि जबकि हम दस आज्ञाओं की अन्य नौ आज्ञाओं पर तो अमल करते हैं—क्योंकि उनके विषय में हमें प्रभु यीशु के नए नियम में मिलता है—परन्तु इस चौथी आज्ञा को आज हम कोई महत्व नहीं देते। क्योंकि यह आज्ञा यहूदियों को दी गई थी, मसीही लोगों को नहीं। और यदि परमेश्वर की इच्छा होती कि हम इस आज्ञा को आज भी मानें, तो जिस प्रकार उसने अन्य नौ आज्ञाओं को फिर से अपनी नई वाचा में लिखवाकर हमें दिया है, वह इस आज्ञा को भी अवश्य ही लिखवाता। विश्राम का दिन, आराम का दिन था। इस दिन यहूदी लोग कोई भी काम नहीं करते थे, परन्तु इस दिन को, अर्थात् शनिवार के दिन को, वे परमेश्वर के लिये मनाते थे। परन्तु नए नियम में हमें मिलता है, कि

क्योंकि प्रभु यीशु विश्राम दिन के बाद, सप्ताह के पहिले दिन अपनी मृत्यु के बाद जी उठे, तो इस कारण आरम्भ से ही सब मसीही लोग हर एक सप्ताह के पहिले दिन, अर्थात् एतवार के दिन को प्रभु का दिन मानते हैं। यही कारण है कि संसार में लगभग सभी देशों में एतवार का दिन छुट्टी का दिन माना जाता है। (देखिए : प्रकाशित-वाक्य १ : १०; मरकुस १६ : १, २; प्रेरितों २० : ७; १ कुरिन्थियों १६ : १, २)।

किन्तु मित्रो, जैसा कि आप को मालूम ही है, कि अब हमारे कार्य-क्रम का समय समाप्त हो रहा है, इसलिये दस आज्ञाओं में की अगली छः आज्ञाओं के बारे में हम अपने अगले पाठ में विचार करेंगे। प्रभु आप सबको आशीष दे।

दस आज्ञाएं

नए नियम के प्रकाश में

(२)

मित्रो :

अपने पिछले बाइबल अध्ययन में हमने बाइबल के पुराने नियम की दस आज्ञाओं में से चार आज्ञाओं के सम्बन्ध में नए नियम के प्रकाश में देखा था। और आज अपने अध्ययन में हम इसी विषय में अगली छः आज्ञाओं के बारे में देखेंगे। विशेष रूप से हम यह देख रहे हैं, कि आज हम परमेश्वर की पुरानी वाचा की दस आज्ञाओं के आधीन नहीं हैं। यद्यपि कि हम उन दस में से नौ आज्ञाओं को आज भी मानते हैं, परन्तु इसलिये नहीं, कि उन्हें परमेश्वर ने अपनी पुरानी वाचा में दिया था, लेकिन इसलिये क्योंकि उन नौ आज्ञाओं का वर्णन हमें फिर से परमेश्वर की नई वाचा अर्थात् उसके नए नियम में मिलता है। बाइबल परमेश्वर का वचन है। परन्तु इस पुस्तक में दो भाग हैं। पहिला भाग है, पुराना नियम या पुरानी वाचा, और दूसरा है, नया नियम या नई वाचा। पुरानी वाचा को परमेश्वर ने उन यहूदियों को दिया था जिन्हें वह मिस्र देश की गुलामी में से मूसा के द्वारा निकालकर लाया था। और नई वाचा को आज परमेश्वर ने जगत के सारे लोगों को दिया है, ताकि वे सब उसके द्वारा यह जानें कि वे परमेश्वर के पुत्र मसीह यीशु के द्वारा अपने पापों के दासत्व से छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं। सो आज हम प्रभु यीशु के नए नियम के आधीन हैं। हमें केवल उन्हीं आज्ञाओं का पालन करना

है जिन्हें परमेश्वर ने आज हमें अपनी नई वाचा में दिया है। हम पुराने नियम की किसी भी आज्ञा का पालन नहीं कर सकते, क्योंकि उस वाचा को परमेश्वर ने उन लोगों को दिया था जो क्रूस पर मसीह यीशु की मृत्यु से पहिले रहते थे, जब प्रभु यीशु क्रूस के ऊपर लटका हुआ था तो उसका निरादर करने के लिये उसके साथ दाएं और बाएं दो डाकुओं को भी क्रूसों पर लटकाया गया था। बाइबल हमें बताती है कि उनमें से एक डाकू ने पश्चाताप किया और प्रभु से कहा, "हे यीशु जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना।" इस पर लिखा है, कि यीशु ने उससे कहा, "कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।" (लूका २० : ४२, ४३)। कुछ लोग अकसर पूछते हैं, कि प्रभु यीशु ने उस मनुष्य को बपतिस्मा लेने को क्यों नहीं कहा ? क्योंकि बाइबल के नए नियम में लिखा है, कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस १६ : १६)। मित्रो, वास्तव में बात यह कि वह डाकू उस समय भी परमेश्वर की उस पहिली पुरानी वाचा के आधीन था, जिसको आज हम पुराना नियम कहते हैं। क्योंकि बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर की दूसरी वाचा, नई वाचा, अर्थात् प्रभु यीशु मसीह का नया नियम उस समय प्रभावकारी बना जब मसीह वास्तव में क्रूस पर मर गया। बाइबल में इब्रानियों नाम की पस्तक के नवें अध्याय में हम यूं पढ़ते हैं : "क्योंकि जहां वाचा बांधी गई है वहाँ वाचा बांधनेवाले की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है। क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बान्धनेवाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती।" (इब्रानियों ९ : १६, १७)।

सो क्रूस पर मसीह की मृत्यु के बाद उसकी नई वाचा पृथ्वी पर प्रभावकारी बनी। और नई वाचा के आने पर परमेश्वर की पुरानी वाचा समाप्त हो गई। इसलिये, आज हम उन आज्ञाओं के आधीन

नहीं हैं जिन्हें हम बाइबल के पुराने नियम में पढ़ते हैं। परन्तु जो आज्ञाएं प्रभु ने आज हमें अपनी नई वाचा अर्थात् नए नियम में दी हैं, हमें केवल उन्हीं को मानना है। परन्तु यदि कुछ आज्ञाएं ऐसी हैं जिनके बारे में हम बाइबल के पुराने नियम में भी पढ़ते हैं और फिर नए नियम में भी पढ़ते हैं, तो हमें उन आज्ञाओं को इसलिये मानना है क्योंकि वे हमें नए नियम में मिली हैं। ठीक यही बात हम पुराने नियम की दस आज्ञाओं के सम्बन्ध में देख रहे हैं। अर्थात्, उन दस में से नौ आज्ञाओं को हमें आज भी मानना चाहिए, इसलिये, क्योंकि उनका आदेश हमें फिर से प्रभु यीशु के नए नियम में मिलता है। हम पुराने नियम की उन दस आज्ञाओं को एक-एक करके नए नियम के प्रकाश में देख रहे हैं। और पिछली बार अपने पाठ में हमने उनमें से चार आज्ञाओं के ऊपर विचार किया था। किन्तु अब हम दस आज्ञाओं की अगली छः आज्ञाओं के बारे में देखेंगे।

पांचवीं आज्ञा देकर, उन इस्राएलियों से परमेश्वर ने यूं कहा था : "तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना" यह आज्ञा उन्हें परमेश्वर ने पारिवारिक शान्ति बनाए रखने के दृष्टिकोण से दी थी। परन्तु फिर हम प्रभु यीशु के नए नियम में, इस सम्बन्ध में यूं पढ़ते हैं : "हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है। अपनी माता और पिता का आदर कर···और हे बच्चेवालो अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा, और चितावनी देते हुए, उनका पालन-पोषण करो।" (इफिसियों ६ : १, २, ४)। सो हम देखते हैं, कि परमेश्वर की नई वाचा में हमें यह आदेश मिलता है, कि बालकों को चाहिए कि वे अपने माता-पिता की आज्ञा मानें और उनका आदर करें। और माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बालकों को रिस न दिलाएं परन्तु प्रभु के वचन की शिक्षा देते हुए उनका पालन-पोषण करें।

इसी प्रकार, छठी आज्ञा देकर परमेश्वर ने कहा था, "तू खून न करना।" यह आज्ञा परमेश्वर ने सामाजिक सुरक्षा बनाए रखने के दृष्टिकोण से दी थी। खून वास्तव में एक बड़ा ही भयंकर अपराध है। यदि मनुष्य किसी की कोई वस्तु उठा ले, तो वह उसे वापस कर सकता है। परन्तु मनुष्य किसी के प्राणों को नहीं लौटा सकता। लेकिन जबकि पुराने नियम की दस आज्ञाओं में यह कहा गया था, कि तू खून न करना। नए नियम में हम यूं पढ़ते हैं, कि यीशु ने कहा, "तुम सुन चुके हो, कि पूर्व काल के लोगों से कहा गया था कि हत्या न करना, और जो हत्या करेगा वह कचहरी में दन्ड के योग्य होगा। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दन्ड के योग्य होगा।" (मत्ती ५ : २१, २२)। वास्तव में यहां प्रभु यीशु के कहने का यह अभिप्राय है, कि यद्यपि पुराने नियम के काल में उन लोगों से कहा गया था, कि यदि कोई कत्ल करेगा तो वह लोगों की कचहरी में दण्ड के योग्य होगा, परन्तु मैं कहता हूं, यीशु ने कहा, कि यदि तुम में से कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा तो वह परमेश्वर की अदालत में दन्ड के योग्य होगा। हत्या करने से पहिले मनुष्य के मन में ईर्ष्या या क्रोध उत्पन्न होता है। एक अन्य स्थान पर प्रभु यीशु के नए नियम में इस सम्बन्ध में हम इस प्रकार पढ़ते हैं : "जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो, कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता।" (१ यूहन्ना ३ : १५)।

इसी तरह, अगली आज्ञा देकर परमेश्वर ने उन पूर्वकाल के लोगों से कहा था, कि, "तू व्यभिचार न करना।" किन्तु फिर प्रभु यीशु ने अपने नए नियम में आज्ञा देकर कहा : "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, कि व्यभिचार न करना। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं," यीशु ने कहा, "कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने

मन में उससे व्यभिचार कर चुका।" (मत्ती ५:२७, २८)। सो एक बार फिर से हम यहां देखते हैं, कि प्रभु यीशु ने हमारा ध्यान उस वस्तु पर दिलाया जो हमें पाप करने को उकसाती है, अर्थात् मनुष्य का मन। हत्या करने से पहले मन में क्रोध उत्पन्न होता है; और व्यभिचार या कोई भी पाप करने से पहिले मन में लालसा उत्पन्न होती है। इसीलिये, बाइबल का बुद्धिमान् लेखक एक स्थान पर लिखकर कहता है, कि, "सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्त्रोत वही है।" (नीतिवचन ४:२३)।

फिर हम पुराने नियम में पढ़ते हैं, कि परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा देकर कहा था, "तू चोरी न करना।" परन्तु प्रभु यीशु का नया नियम उन लोगों से, जिन्होंने उसमें विश्वास किया है और पाप से अपना मन फिराया है और अपने पापों की क्षमा के लिये उसकी आज्ञानुसार बपतिस्मा लिया है, यूं कहता है : "चोरी करनेवाला चोरी न करे; बरन भले काम करने में अपने हाथों से परिश्रम करे : इसलिये कि जिसे प्रयोजन हो, उसे देने के लिये उसके पास कुछ हो।" (इफिसियों ४:२८)। और न केवल यह, परन्तु एक अन्य स्थान पर नए नियम में यों लिखा है, कि चोरी करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। (१ कुरिन्थियों ६:९)।

आगे हम पढ़ते हैं, कि नवीं आज्ञा देकर उन पूर्वकाल के लोगों से परमेश्वर ने यूं कहा था : "तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना।" जैसे कि हम देखते हैं, कि आठवीं आज्ञा को परमेश्वर ने मनुष्य की वस्तुओं की सुरक्षा के लिये दिया था। इस आज्ञा को परमेश्वर ने मनुष्य के मान् अथवा आदर की सुरक्षा के लिये दिया था। इन्सान की इज्जत उसकी सबसे बड़ी दौलत है। और झूठी साक्षी उसके नाम को ख़राब करती है। बाइबल का बुद्धिमान् लेखक एक जगह कहता

है : "बड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है।" (नीतिवचन २२:१)। किसी ने कहा है : "कि यदि कोई मनुष्य मेरी जेब से बटुआ निकाल लेता है तो वह कूड़े-करकट की चोरी करता है। परन्तु वह जो मेरे अच्छे नाम पर कीचड़ उछालता है या उसे गन्दा करता है, उसे स्वयं तो उस से कोई लाभ नहीं होता किन्तु मैं अवश्य कंगाल हो जाता हूं।" सो कोई किसी के अच्छे नाम या इज्ज़त को न बिगाड़े, इसलिये परमेश्वर ने उन लोगों को यह आज्ञा दी थी, कि, "तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना।" लेकिन प्रभु यीशु के नए नियम में आज हम इस प्रकार पढ़ते है : "जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है, वह अपनी जीभ को बुराई से, और अपने होठों को छल की बातें करने से रोके रहे।" (१ पतरस ३:१०)। तथा "इस कारण झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले।" (इफिसियों ४:२५)। सो न केवल झूठी साक्षी, परन्तु हमें कभी भी किसी भी मनुष्य के साथ झूठ नहीं बोलना चाहिए। क्योंकि, प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, कि मनुष्य न्याय के दिन अपनी बातों ही के कारण दोषी और अपनी बातों ही के कारण निर्दोष ठहराया जाएगा (मत्ती १२:३६, ३७)।

और फिर, उन दस आज्ञाओं में अंतिम आज्ञा देकर परमेश्वर ने कहा था : "तू किसी के घर का लालच न करना; न तो किसी की स्त्री का लालच करना, और न किसी के दास, दासी, वा बैल गदहे का, न किसी की किसी वस्तु का लालच करना।" लालच वास्तव में एक ऐसा पाप है जिस में फंसकर मनुष्य अनेक अन्य पाप करता है। लालच के कारण मनुष्य झुठ बोलता है, चोरी करता है, और हत्या करता है। इसीलिये, नए नियम में प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, "हर प्रकार के लोभ से अपने आपको बचाए रखो।" (लूका १२:१५)। और फिर बाइबल के नए नियम में एक अन्य

क्थान पर हम यूं पढ़ते हैं, कि एक लोभी मनुष्य मूरत पूजनेवाले के बराबर है और वह परमेश्वर के राज्य के भीतर प्रवेश न करेगा। (इफिसियों ५:५)। (देखिए १ कुरिन्थियों ६:१०)।

सो, मित्रो, हमारे इस पाठ का मुख्य उद्देश्य यही था कि हम सब अच्छी तरह से जान लें, कि आज हम दस आज्ञाओं में से नौ आज्ञाओं के मुख्य सिद्धांतों को मानते हैं। परन्तु इसका कारण यह नहीं है कि इन बातों को आज हम इसलिये मानते हैं क्योंकि इनकी आज्ञा दस आज्ञाओं में दी गई थी, परन्तु क्योंकि आज इन बातों की शिक्षा हमें प्रभु यीशु के नए नियम में मिलती है। क्योंकि आज हम बाइबल के पुराने नियम की वाचा के आधीन नहीं हैं, परन्तु हम आज प्रभु यीशु के नए नियम के आधीन हैं।

प्रभु आपको अपने वचन को समझने और अपनी इच्छानुसार चलने के लिये सामर्थ हैं।

क्या हम सब बाइबल को एक समान समझ सकते हैं ?

मित्रो :

इस कार्यक्रम में हम कुछ ऐसी बातों के ऊपर विचार करते हैं जिनका सम्बन्ध मनुष्य की आत्मा से है। और आज अपने पाठ में हम विशेष रूप से इस प्रश्न के ऊपर विचार करेंगे, कि क्या हम सब बाइबल को एक समान समझ सकते हैं ? बाइबल एक पुस्तक है, और यह पुस्तक परमेश्वर का वचन है। अर्थात् इस पुस्तक को परमेश्वर ने अपनी प्रेरणा के द्वारा लिखवाया है। यह पुस्तक हमें सच्चे परमेश्वर के विषय में बताती है। यह पुस्तक हमें मनुष्य के सम्बन्ध में बताती है। यह पुस्तक हमें बताती है, कि मनुष्य किस प्रकार अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके मुक्ति पा सकता है। और यह पुस्तक हमें बताती है, कि हम किस प्रकार सच्चे परमेश्वर की सच्ची उपासना कर सकते हैं। सो यह पुस्तक, अर्थात् बाइबल एक बड़ी ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। परन्तु बहुतेरे लोगों का विचार है, कि यह पुस्तक इतनी कठिन है कि इसे हम सब एक समान नहीं समझ सकते। अर्थात् हम सब इसे पढ़ सकते हैं, परन्तु हम सब इसे एक समान समझ नहीं सकते। किन्तु मित्रो, यह बात सच नहीं है। क्योंकि यदि परमेश्वर हम सब पर अपनी इच्छा को प्रगट करना चाहता है, तो हम यह भी जानते हैं कि वह इस योग्य है कि वह अपने वचन को हमारे ऊपर इस प्रकार प्रगट करे ताकि हम सब उसे भली प्रकार समझ सकें।

सो परमेश्वर ने अपने वचन को बाइबल में इस प्रकार नहीं लिखवाया है कि वह समझने में कठिन या असम्भव है। परन्तु उसने अपने वचन को बड़े ही स्पष्ट तथा साधारण शब्दों में हमें लिखवाकर दिया है। क्योंकि वह चाहता है कि हम उसकी बातों को समझें और उसकी इच्छा पर चलें।

परन्तु जिन लोगों को उसका वचन समझने में कठिन तथा असम्भव प्रतीत होता है, इसका कारण यह है कि वे बाइबल में लिखी बातों को अपने पूर्वद्वेष या पूर्व-धारणाओं, अर्थात् पूर्व विचारों के साथ पढ़ते हैं। जैसे कि अभी कुछ समय ही पूर्व मैं एक व्यक्ति से बात कर रहा था, जिसका यह विचार था कि परमेश्वर सारे जगत से प्रेम करता है और उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को सारे जगत के लिए बलिदान किया है, इस कारण वह सारे जगत का उद्धार करेगा। अब, यहाँ हम देखते हैं कि यह सच है, कि बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने सारे जगत से प्रेम रखा, और यह भी सच है कि उसने सारे जगत के लोगों के पापों के कारण अपने पुत्र को बलिदान कर दिया। परन्तु यह सच नहीं है कि वह इस कारण सारे जगत का उद्धार करेगा। यह विचार या यह धारणा गलत है। क्योंकि बाइबल में लिखा है कि मसीह यीशु उन सब के लिए उद्धार का कारण बना है जो उसकी आज्ञाओं को मानते हैं (इब्रानियों ५ : ८, ९)। बाइबल कहती है कि पापों से मुक्ति पाने के लिए हमें आवश्यक है कि हम यीशु मसीह में विश्वास लाएं, और अपने-अपने पापों से मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लें। (मरकुस १६ : १६; प्रेरितों २ : ३८)।

फिर, इसी प्रकार, कुछ लोगों की धारणा यह है, कि जब हम मसीह में विश्वास ले आते हैं, और उसे अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता

मान लेते हैं, तो इस प्रकार हम उद्धार पा लेते हैं। परन्तु बाइबल में लिखा है, कि यीशु मसीह ने कहा था, कि उद्धार उसी मनुष्य का होगा जो उसमें विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा। (मरकुस १६ : १६)। लेकिन, वे कहते हैं, कि बपतिस्मा लेकर हम उस उद्धार को प्रगट करते हैं जिसे हमने विश्वास के द्वारा भीतर पाया है। सो आप देख सकते हैं, कि जब हम बाइबल के किसी विषय को अपनी पूर्व धारणाओं के आधार पर समझने की कोशिश करते हैं, तो उसे फिर हम उस तरह नहीं समझ पाते जिस तरह कि परमेश्वर चाहता है। जैसे कि अभी हमने देखा, कि जबकि बाइबल कहती है, कि हमें उद्धार प्राप्त करने के लिए बपतिस्मा लेना चाहिए। परन्तु लोग कहते हैं कि हम बपतिस्मा लेकर यह प्रगट करते हैं कि हमने पहिले ही उद्धार पा लिया है।

परन्तु बात यह है, कि जब हम किसी विषय पर अपनी पूर्व धारणा बना लेते हैं, तो उसे सही ठहराने के लिए हम हर सम्भव कोशिश करते हैं। और यहाँ तक कि, अपनी पूर्व धारणा या पूर्व विचार को सिद्ध करने के लिये हम इस प्रकार के प्रमाण पेश करने लगते हैं जो सच्चाई के विरुद्ध हैं। अब यहाँ एक उदाहरण हम उन लोगों का ही लेते हैं जिनका यह विचार है कि उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक नहीं है। वे कहते हैं, कि यद्यपि प्रभु यीशु ने कहा, कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा परन्तु क्योंकि उसने आगे कहा है, कि जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। (मरकुस १६ : १६), इस कारण उद्धार पाने के लिए केवल विश्वास लाना ही बहुत है। अर्थात् क्योंकि विश्वास न लानेवाला मनुष्य नाश होगा, इसलिए केवल विश्वास लानेवाला ही उद्धार पाएगा। इस प्रकार के तर्क से कुछ लोग अपनी इस पूर्व धारणा को प्रमाणित करना चाहते हैं, कि उद्धार पाने के लिए मसीह में केवल

विश्वास लाना ही आवश्यक है तथा बपतिस्मा लेना आवश्यक नहीं है। परन्तु मान लीजिए, यदि मैं आपसे कहूं, कि जो खाना खाएगा और पचाएगा वह स्वस्थ रहेगा, परन्तु जो खाएगा नहीं वह मर जाएगा। तो क्या यह ग़लत है ? आप जानते हैं, कि स्वस्थ रहने के लिए न केवल भोजन खाना परन्तु पचाना भी आवश्यक है। जबकि भोजन न खाना ही मनुष्य को रोगी और नाश कर सकता है। सो प्रभु यीशु के कहने का अभिप्राय यहां यह है, कि उद्धार उसी का होगा जो उसमें विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा, परन्तु नाश वह होगा जो उसमें विश्वास न करेगा। (मरकुस १६ : १६)। आप देख सकते हैं, कि यह बात समझने में कितनी सरल है—और हम सब इसको इसी प्रकार समझ सकते हैं। परन्तु जब हम इस साधारण सी बात को अपनी पूर्व-धारणाओं तथा पूर्व-विचारों के आधार पर समझने की कोशिश करते हैं, तो हम इस एक ही साधारण सी बात को अलग-अलग मानने लगते हैं। किन्तु इसी प्रकार के अनेक अन्य उदाहरण भी हम देख सकते हैं, जिनके कारण बाइबल में लिखी बातों को हम सब अलग-अलग समझने वा मानने लगते हैं। परन्तु यदि हम सब परमेश्वर के साधारण वचन को साधारण ही रहने दें, और जैसा लिखा है उसे वैसा ही देखें तो इसमें कोई संदेह नहीं कि हम सब परमेश्वर के वचन बाइबल को एक समान समझ सकते हैं।

इसी प्रकार, कुछ अन्य लोग बाइबल में लिखी बातों को इतना अधिक गूढ़ मानने लगते हैं कि उन्हें प्रत्येक बात बड़ी ही गहरी दीखने लगती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि परमेश्वर बड़ा ही महान् है और उसके सोच-विचार मनुष्य के से नहीं हैं (यशायाह ५५:८,९)। परन्तु मनुष्य को उसी ने बनाया है, और वह जानता है कि मनुष्य कितनी समझ रखता है। उसने बाइबल में अपनी इच्छा को संसार में कुछ चुने हुए लोगों या कुछ बुद्धिमान् लोगों के लिये ही नहीं लिखवाया

है। परन्तु उसने अपने वचन को संसार के प्रत्येक मनुष्य के लिये, साधारण और सीधे-साधे लोगों के लिये भी दिया है। वह चाहता है कि उसकी इच्छा को संसार का प्रत्येक मनुष्य समझे। क्योंकि वह संसार के प्रत्येक मनुष्य का उद्धार करना चाहता है। सो गहराई तथा गूढ़ता के विपरीत उसका वचन सरल तथा साधारण है। परन्तु जैसा कि मैंने कहा, कुछ लोग बाइबल की प्रत्येक बात को बड़ी ही गहराई के साथ देखने का प्रयत्न करते हैं, और इस प्रकार वे उसमें लिखी सीधी तथा साधारण बातों को भी व्यर्थ में तोड़ने-मरोड़ने लगते हैं। जैसे कि अभी कुछ ही समय पूर्व जब मैं एक व्यक्ति को प्रभु यीशु के सामर्थपूर्ण कामों के सम्बन्ध में बता रहा था, तो उसने कहा कि इसका अर्थ यह नहीं है कि यीशु ने वास्तव में लोगों की शारीरिक आँखों को खोल दिया, परन्तु इसका अभिप्राय यह है कि उसने उनकी मन की आंखों को खोल दिया। अर्थात् वह मनुष्य यह स्वीकार नहीं करना चाहता था कि यीशु ने ऐसे-ऐसे बड़े काम किए। सो उसने कहा कि इसका अभिप्राय यह है कि यीशु ने लोगों को आत्मिक चंगाई दी और आत्मिक भोजन दिया।

इसी तरह, एक अन्य व्यक्ति से जब मैं बपतिस्मे के सम्बन्ध में बात कर रहा था, तो उन्होंने कहा कि बपतिस्मा लेने का अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य को जल के भीतर डुबोया जाए। परन्तु इसका अर्थ है, मसीह की बातों में डूब जाना!

सो हम देखते हैं, कि जब लोग परमेश्वर के वचन, अर्थात् बाइबल को अपने मन में बनी पूर्व धारणाओं या अपने पूर्व-विचारों के साथ पढ़ते हैं, या जब वे उसमें लिखी प्रत्येक बात को बड़ी ही गूढ़ या गहरी समझकर पढ़ते हैं, तो वे उसे उस तरह नहीं समझ पाते जैसे कि परमेश्वर चाहता है कि हम सब उसके वचन को समझें।

परमेश्वर एक है, और पृथ्वी पर सब मनुष्यों के लिये उसकी एक ही इच्छा है। उसने अपने वचन की हम सबको एक ही पुस्तक दी है; उस पुस्तक में उसने हम सबको एक ही मार्ग दिया है, जिस पर चलकर हम उसके पास पहुंच सकते हैं (यूहन्ना १४:६)। सो यदि हम बाइबल को उचित दृष्टिकोण से पढ़ें। यदि हम उसमें लिखी बातों को अपनी पूर्व-धारणाओं को प्रमाणित करने के दृष्टिकोण से न पढ़ें। और यदि हम इस पुस्तक में लिखी प्रत्येक बात को गहरी या गूढ़ मानकर और व्यर्थ में तोड़-मरोड़कर न पढ़ें। तो हम सब परमेश्वर के वचन बाइबल को एक समान समझ सकते हैं।

अब, क्योंकि हमारे कार्यक्रम का समय समाप्त हुआ चाहता है, मैं आपसे आज्ञा चाहूंगा। प्रभु आप सबको आशीष दे।

हम बाइबल का प्रचार क्यों करते हैं ?

मित्रो :

आप में से बहुतेरे लोग कदाचित् सोचते होंगे, कि हम रेडियो के द्वारा इतना अधिक बाइबल का प्रचार क्यों करते हैं ? क्यों हम इतना अधिक धन तथा शक्ति बाइबल का प्रचार करने में व्यय करते हैं ? क्यों हम आप लोगों से बार-बार निवेदन करके कहते हैं, कि आप हमारे यहां से बाइबल के सम्बन्ध में मुफ्त पाठों को मंगवाकर पढ़ें ? मित्रो, यह सब हम इसलिये करते हैं, क्योंकि बाइबल एक बड़ी ही महत्वपूर्ण पुस्तक है । हम चाहते हैं कि आप सब इस पुस्तक को पढ़ें, और इस में लिखी बातों पर विचार करें । क्योंकि बाइबल पृथ्वी पर की अनेक पुस्तकों में से कोई एक पुस्तक नहीं है, परन्तु यह पुस्तक परमेश्वर का वचन है । यद्यपि इस पुस्तक को सौलह सौ वर्षों के भीतर लगभग चालीस लोगों ने विभिन्न समय तथा कालों में रहकर लिखा था—परन्तु वे सब के सब बाइबल की छिसासठ पुस्तकों में एक ही बात कहते हैं । और जो कुछ भी इन लेखकों ने बाइबल की पुस्तकों में लिखा उस सब का श्रेय उन लोगों ने परमेश्वर को दिया । अर्थात्, जगह-जगह पर वे लिखकर बार-बार कहते हैं, कि परमेश्वर ने यूं कहा, या परमेश्वर यों कहता है, या प्रभु का यह वचन है । अर्थात् ये लेखक परमेश्वर के हाथ में औज़ारों के समान थे, जिन्हें उसने अपनी इच्छा से और अपनी इच्छा के लिये इस्तेमाल किया । परमेश्वर मनुष्य से बातें करना चाहता है । वह मनुष्य पर अपनी इच्छा को प्रगट करना चाहता है । सो उसने मनुष्य के लिये बाइबल को

लिखवाया। यहि कारण है कि हम बाइबल का प्रचार करते हैं। इसीलिए हम आपको बार-बार प्रोत्साहित करते हैं कि आप हमारे यहां से बाइबल के मुफ्त पाठों को मंगवाकर पढ़ें। क्योंकि हमारी इच्छा है कि आप परमेश्वर की इच्छा को जानें।

जब आप बाइबल को पढ़ेंगे तो आप देखेंगे कि उसकी कथा बड़ी ही सुन्दर, अद्भुत तथा अनोखी है। इस पुस्तक की कथा का आरम्भ एक बड़े ही सुन्दर बाग से होता है, जिसे परमेश्वर ने बनाया था। आरम्भ में हम पढ़ते हैं, कि आदि में परमेश्वर ने स्वर्ग तथा पृथ्वी की रचना की। सृष्टि में जो कुछ भी हम देखते हैं, बाइबल बताती है, कि परमेश्वर ने उस सबको अपने वचन की सामर्थ से उत्पन्न किया। और सारी वस्तुओं को बनाने के बाद, जो मनुष्य को आवश्यक हैं, परमेश्वर ने एक सुन्दर बाटिका को उत्पन्न किया। जिसमें उसने उस मनुष्य को रखा जिसे उसने अपने स्वरूप तथा अपनी समानता पर बनाया था। उस सुन्दर बाटिका में मनुष्य को हर प्रकार का सुख-चैन और सुरक्षा उपलब्ध थी। वह वहां परमेश्वर की उपस्थिति में रहता था। वहां वह न केवल शारीरिक रूप से परन्तु आत्मिक रूप से भी जीवित था। परमेश्वर उसके साथ था, और वह परमेश्वर के साथ था। परन्तु एक दिन, बाइबल बताती है, कि मनुष्य के भीतर आंखों की अभिलाषा उत्पन्न हुई। और उसने शैतान के कहने में आकर बाटिका के बीचों-बीच लगे उस वृक्ष की ओर देखकर उसके फल का लालच किया, जिसके विषय में परमेश्वर ने उस पुरुष तथा स्त्री को आज्ञा देकर कहा था, कि तुम उसे कभी नहीं खाना, क्योंकि जिस दिन तुम उसे खाओगे उसी दिन मर जाओगे। और आंखों की अभिलाषा ने मनुष्य के भीतर शरीर की अभिलाषा को उत्पन्न किया। इस पर मनुष्य ने उस फल को तोड़कर खाया। किन्तु शीघ्र ही उन्हें इस बात का आभास हुआ कि उन्होंने परमेश्वर

की आज्ञा को तोड़ डाला है। और उसी दिन से मनुष्य के ऊपर पीड़ाओं, जोखिमों तथा समस्याओं का आरम्भ हुआ। क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को उस बाटिका में से, अर्थात् अपनी उपस्थिति में से बाहर निकाल दिया।

मित्रो, कभी-कभी कुछ लोग एक शिकायत सी करके कहते हैं, कि यदि परमेश्वर प्रेम है, यदि वह जगत से प्रेम करता है, और यदि वह सर्वशक्तिमान् है, तो फिर वह हमारे ऊपर दुख, जोखिम; पीड़ाएं और समस्याएं क्यों भेजता है? किन्तु मित्रो, वास्तव में बात ऐसी नहीं है। परमेश्वर चाहता है कि हम में से प्रत्येक मनुष्य सुख, चैन, आनन्द और सुरक्षा के साथ रहे। जब उसने मनुष्य को आरम्भ में बनाया था तो उसकी यही इच्छा थी। उसने मनुष्य को एक स्थान पर रखा था जहां न उसे कोई चिन्ता थी, न कोई भय था; न किसी प्रकार का कोई शोक या विलाप था। वहां मनुष्य के पास किसी भी तरह की कोई समस्या नहीं थी। परन्तु आज जगत में प्रत्येक मनुष्य के पास किसी न किसी रूप में कोई चिन्ता है; भय है, शोक और विलाप है, और अनेक समस्याएं हैं। जानते हैं क्यों? क्योंकि आरम्भ में मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा को तोड़कर पाप किया था, और परमेश्वर की उस बाटिका में रहने के अपने अधिकार को खो दिया था, जहां न उसे कोई चिन्ता थी, न भय था; जहां न कोई शोक था और न विलाप था, न कोई पीड़ा थी न कोई समस्या थी। इसलिये यदि आज पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य नाना प्रकार के जोखिमों तथा समस्याओं का सामना कर रहा है, तो इसका कारण परमेश्वर नहीं है, परन्तु स्वयं मनुष्य है।

परन्तु परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी उपस्थिति में से इसलिये नहीं निकाला कि वह अब मनुष्य से प्रेम नहीं रखता। किन्तु उसने

अपने आप को मनुष्य से इसलिये अलग कर लिया क्योंकि वह पाप से घृणा करता है। और इसी मुख्य बात को मनुष्य पर प्रगट करने के लिये परमेश्वर ने अपनी पुस्तक बाइबल को लिखवाया है। वह चाहता है, कि मनुष्य फिर से उसके पास उसकी उपस्थिति में वापस लौट आए। वह मनुष्य के साथ रहना चाहता है।

सो बाइबल के द्वारा परमेश्वर मनुष्य पर प्रगट करता है, कि उसने जगत का उद्धार करने के लिए अपने वचन को पृथ्वी पर भेज दिया। परमेश्वर का वह सामर्थी वचन मनुष्य का रूप लेकर जगत में उत्पन्न हुआ। परमेश्वर की इच्छा से उसके पुत्र का नाम यीशु, अर्थात् उद्धारकर्त्ता, और मसीह, अर्थात् परमेश्वर का अभिषिक्त रखा गया। फिर वह यीशु जब बड़ा हुआ तो उसने लोगों के बीच बड़े-बड़े सामर्थ के काम किए। और उसके सामर्थपूर्ण कामों को देखकर अनेक लोगों ने उस पर यह विश्वास किया कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। परन्तु फिर, परमेश्वर की मनसा तथा इच्छा की पूर्ति के लिये उसका पुत्र कुछ लोगों के षडयंत्र का शिकार हुआ। उन्होंने उस पर झूठे दोष लगाए, और उसे एक अपराधी की नाईं मृत्यु दन्ड दिलवाया। वे उसे एक पहाड़ी के ऊपर ले गए, जहां उन्होंने उसे एक लकड़ी के क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया। फिर उन्होंने उस क्रूस को खड़ा करके भूमी में गाड़ दिया और यीशु को उस पर लटका हुआ मरने को छोड़ दिया। इस प्रकार यीशु, परमेश्वर का पुत्र, क्रूस के ऊपर परमेश्वर की इच्छा से हमारे पापों के लिये लटकाया गया। बाइवल में परमेश्वर हमें बताता है, कि इस तरह उसने अपने पुत्र को हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये दे दिया। इस पुस्तक के द्वारा परमेश्वर हम पर प्रगट करता है, कि हम उसके पुत्र के बलिदान के कारण, उसके पास फिर से वापस आ सकते हैं; हम उसकी बाटिका में रहने के अधिकार को फिर से प्राप्त कर सकते हैं।

बाइबल में हम एक स्थान पर यों पढ़ते हैं : "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। सो जबकि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे ? क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर, मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे ? और केवल यही नहीं, परन्तु हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जिसके द्वारा हमारा मेल हुआ हुआ है, परमेश्वर के विषय में घमन्ड भी करते हैं।" (रोमियों ५ : ६—११)।

सो बाइबल की कथा वास्तव में प्रेम की कथा है। इस पुस्तक में हम सर्व प्रथम मनुष्य को परमेश्वर के साथ देखते हैं। परन्तु फिर हम देखते हैं, कि मनुष्य अपने पाप के कारण परमेश्वर से अलग हो गया। किन्तु तभी क्रूस के ऊपर परमेश्वर का प्रेम प्रगट हुआ, जहाँ यीशु हम सबके पापों के लिये बलिदान हुआ। इसका अर्थ यह है, कि यीशु ने हमारे दन्ड को अपने ऊपर ले लिया; उसने हमारे पाप को अपने ऊपर लेकर हमारे कारण एक अपराधी की नाईं मृत्यु दन्ड सहा और इस प्रकार परमेश्वर बाइबल के द्वारा हमें बताता है, कि अब हम उसके पुत्र के लोहू के द्वारा धर्मी ठहरकर फिर से उस के पास वापस आ सकते हैं। यीशु हमारा मेल है। वह मनुष्य तथा परमेश्वर के बीच में एक बिचवई है। और बाइबल में लिखा है, कि जब हम यीशु मसीह में विश्वास लाते हैं और मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेते हैं, तो हम उसकी मृत्यु के

कारण अपने पाप से मुक्त होकर फिर से परमेश्वर के निकट आ जाते हैं। (२ कुरिन्थियों ५ : १७—२१; गलतियों ३ : २६, २७; रोमियों ६ : ३—६; यूहन्ना ३ : १६, ३६; प्रेरितों २ : ३८; रोमियों ८ : १)।

इसलिये, जिस प्रकार हमने देखा था, कि बाइबल की कथा का आरम्भ एक बाटिका में हुआ था। वैसे ही हम देखते हैं, कि इस पुस्तक का अंत एक बाटिका में होता है। अर्थात् जिस अधिकार तथा आशीष को मनुष्य ने आदम में खो दिया था, उसे वह फिर से मसीह में प्राप्त हो जाता है। परमेश्वर ने मनुष्य को वास्तव में अपनी बाटिका में रहने को सृजा था। परन्तु मनुष्य ने आदम में उस आशीष को खो दिया था। किन्तु, मसीह के कारण मनुष्य फिर से परमेश्वर के पास जा जाता है, उस बाटिका में जहां जीवन का जल है और जीवन का पेड़ है। जहां, परमेश्वर अपनी पुस्तक में कहता है, वह अपने लोगों के साथ हमेशा तक रहेगा। और लिखा है, बाइबल में, कि तब वहां परमेश्वर, उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी। (प्रकाशितवाक्य २१, २२)।

मित्रो, यह है बाइबल की कथा, अर्थात् परमेश्वर के प्रेम की कथा। परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की, उसने मनुष्य के साथ प्रेम रखा। परन्तु मनुष्य ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप करके अपने आप को उस से अलग कर लिया। किन्तु बाइबल के द्वारा हमारा परमेश्वर हमें बताता है, कि हम किस प्रकार फिर से उसके पास वापस आ सकते हैं।

सो मेरा आप से आग्रह है कि इस पुस्तक को आप अवश्य ही पढ़ें। क्योंकि इस पुस्तक में आपके लिये परमेश्वर का संदेश है। और

जैसा कि अभी आप को फिर से बताया जाएगा, आप हमारे यहाँ से बाइबल के पाठों को मुफ्त में मंगवाकर अपने ही घर में पढ़ सकते हैं।

परमेश्वर आपकी सहायता और आपकी अगुवाई करे, जबकि आप उसके वचन को तथा संसार की सबसे महान् पुस्तक को पढ़ने का निर्णय करते हैं। और उसी का अनुग्रह हम सब पर बना रहे।

अन्य उपलब्ध रचनाएं :

१. पन्द्रह प्रभावशाली रेडियो प्रवचन
२. बीस लघु रेडियो संदेश
३. मुक्ति के संदेश
४. हम किसके पास जाएं ?
५. यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे
६. जीवन के वचन
७. मसीही संदेश
८. पुराने नियम के अनुसार
९. नए नियम के अनुसार
१०. मसीह के दावे
११. यीशु के दृष्टान्त
१२. ऐसा बड़ा उद्धार
१३. वस्तुएं जो विशाल हैं
१४. मसीह का सुसमाचार
१५. क्या यह सच है ?
१६. सुसमाचार बोनेवाला

लेखक : सनी डेविड